17 मार्च

गुरुबालकदास शहादत दिवस

मिशन उड़ान









16 मार्च को औराबांधा में क्या हुआ था गुरुबालकदास की हत्या क्यों हुई

कौन थे उनके हत्यारे ?

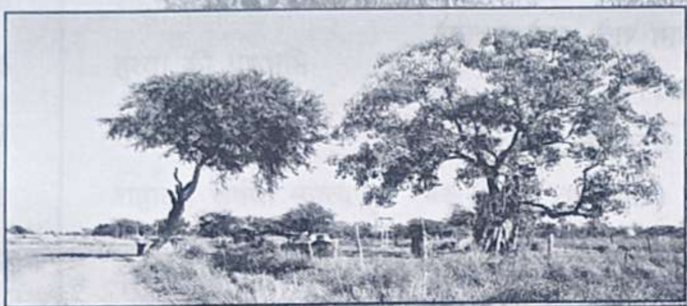
उनके मृत शरीर को भण्डारपुर में क्यों नहीं दफनाया गया

 सहयोग राशि : ₹ 25/- 17 मार्च 2018

17 मार्च

मिशन उड़ान

गुरुबालकदास शहादत दिवस









16 मार्च को औराबांधा में क्या हुआ था

गुरुबालकदास की हत्या क्यों हुई

कौन थे उनके हत्यारे ?

उनके मृत शरीर को भण्डारपुर में क्यों नहीं दफनाया गया

सहयोग राशि : ₹ 25/- 17 मार्च 2018

सादर समर्पण

यह स्मारिका गुरुबालकदास और उन सभी ज्ञात व अज्ञात योद्धाओं को समर्पित है, जिन्होंने लोक समाज के रोटी और स्वाभिमान की रक्षा में जातिवादी सामंती तत्वों से संघर्ष करते हुए शहीद हुए।

लेखक/संपादक मंडल

स्मारिका का नाम	:	गुरुबालकदास शहादत दिवस
लेखक/संपादक मंडल	:	कुमार (रामकुमार लहरे), हरीश पांडल, टेकचंद पांडल, किशोर सोनवानी, कोमल दिवाकर, चिंतामणी देशलहरे
अतिथि लेखक/कवि	:	घासीराम रात्रे, मनोज लहरे
प्रकाशन वर्ष	:	मार्च 2018
संस्करण	:	प्रथम संस्करण
लेखक, आवरण चित्र, स्मारिका परिकल्पना	:	कुमार (रामकुमार लहरे)
प्रधान संपादक	:	हरीश पांडल
टाईप सेटिंग	:	एम.एल.श्रीवास, मास्टर ग्रॉफिक्स
फोटोग्रॉफी	:	इन्द्रकुमार भारद्वाज
विशेष सहयोग	:	साहेब श्री लखन सुबोध, अध्यक्ष-गुरुघासीदास विचार शोध संस्था (GVSS) व केन्द्रिय संयोजक-गुरुघासीदास सेवादार संघ (GSS)
संदर्भ ग्रंथ	:	GSS कैडर क्लास पाठ्य पुस्तिका, अक्टूबर 2012, द्वितीय संस्करण
प्रकाशक	:	सतनाम पुनर्जागरण मिशन (SPM) बिलासपुर (छ.ग.)
		59, लहरे निवास, सतनाम नगर चौक, अमेरी, बिलासपुर (छ.ग.) 495001
सहयोग राशि	:	**₹ 25/-** (स्मारिका निजी वितरण हेतु)
सम्पर्क वाट्सऐप नम्बर		9752197165, 7898992499
ई-मेल	:	gss.satnamiunion@gmail.com
डाक पता (स्मारिका हेतु)	:	हरीश पांडल, पांडल निवास, सांई बाबा अस्पताल के सामने, रिंग रोड नं.2, बिलासपुर (छ.ग.)
न्यायालयीन क्षेत्र	:	बिलासपुर (छ.ग.)

विषय-सूची

विचार आमंत्रण



इस पत्रिका के मुद्रण में काफी सावधानी बरती गयी है। इसके बाद भी कुछ गलतियां हो सकती है। हमारी इच्छी थी कि हम गुरुबालकदासजी के शहादत से संबंधित विभिन्न तथ्यों का विवरण तथा ऐहिासिक कथा-कहानी को स्थान देते, लेकिन हमें ऐसा सामाग्री प्राप्त नहीं हो पाया। अगर आपके पास पत्रिका में प्रकाशित विचार से अलग या ऐसा विवरण जो पत्रिका में नहीं है, और आपके पास हो तो गुरुबालकदासजी के जीवन, कार्य व शहादत से संबंधित विचार, ऐतिहासिक जानकारी, लेख, फोटो, कार्टून, गीत, कविता, नाटक, कहानी आदि हमें भेजें।

चयनित सामग्री को अगले संस्करण में प्रकाशित किया जायेगा।

यह पत्रिका आपको कैसा लगा इस पर भी आप पाठकों से विचार आमंत्रित है। इससे संबंधित प्रसंशा, सुझाव या आलोचना हमें जरूर भेजें। इससे हमें आगामी संस्करण को अधिक अच्छा व त्रुटि रहित बनाने की प्रेरणा मिलेगी।

भवदीय

दिनांक :1 6.03.2018 **टेकचंद पांडल**

स्थानः बिलासपुर (छ.ग.) लेखक / संपादक मंडल की ओर से

संपादक की कलम से

भारतीय समाज में सभी समुदाय का अपना इतिहास है, इसी क्रम में सतनामी समुदाय का भी अपना इतिहास है, जिसे मुख्यधारा में कभी नहीं लाया गया और न ही इस पर सतनामी समुदाय के बुद्धिजीवियों/ साहित्यकारों ने अपनी विवेक के बल पर कभी कोई ऐतिहासिक साहित्य का लेखन ही नहीं किया। समाज के साहित्यकारों ने कभी लेखन के खेत्र में साहित्य को समाज के विकास का माध्यम समझा ही नहीं, समाज के महापुरुषों के किये गये ऐतिहासिक महत्वपूर्ण घटनाओं को समाज के समक्ष लाया ही नहीं और उन ऐतिहासिक घटनाक्रम को जानने से समाज पर क्या प्रभाव पड़ता है और समाज उन ऐतिहासिक घटनाओं से क्या सबक, शिक्षा, ग्रहण करता है इस पर कभी ध्यान ही नहीं दिया गया। सतनामी समाज का इतिहास लिपिबद्ध न होने के कारण लिखित रुप से सामने नहीं आ सका और इस पर षड्यंत्र पूर्वक कार्यवाही भी किया गया। आज भी वाचकों की नजर, जुबां से सुना, देखा जाय तो एक महत्वपूर्ण इतिहास सामने आता है। जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी यथावत है। वर्तमान परिस्थितियों में जो गुरुबालकदास जी से सम्बंधित परिचय (किस्सा-कहानी) है उसका सामाजिक परिदृश्य से कोई वास्ता नहीं है, केवल मिथकीय चरित्र का ही उल्लेख है। इस तरह की अज्ञानता, गैर वैज्ञानिक विचारधारा समाज के लिए अहितकारक है। कौन सी मान्यताएँ समाज के लिए हानिकारक है। हानिकारक मान्यताओं को दर-किनार कर समाज में वैचारिक, वैज्ञानिक और चरित्र से प्रभावशील विचारों को अपने लेखन में महत्व देना चाहिये।

हमारे महापुरुषों के जीवनकाल में घटी-घटनाओं को उनके बनाये संस्कृति, रीति-रिवाज का जीवंत लेख के रुप में समाज के समक्ष प्रस्तुत करने की अहम पहल अब हमारे लेखकों, साहित्यकारों को करना चाहिये।

उदाहरण – मराठी के वरिष्ठ आदिवासी कवि ''सोनवाने'' के लेख ''स्टेज'' से साभार

हम स्टेज पर गये ही नहीं
हमें बुलाया भी नहीं गया
उंगली के इशारे से हमारी, जगह हमें दिखाई गई
वे स्टेज पर खड़े होकर
हमारा दुख हमी को सुनाते हैं।''

उपरोक्त कविता का आशय यह है कि बहुत दूर खड़े होकर जो चीज दिख जाती है, उनका बड़ा आर्थिक राजनीतिक, सामाजिक आदि सभी तरह की शोषण होता है और जो संस्कृति,परंपरा, इतिहास, हम सतनामी समाज पर थोपा गया है, उसका सच्चाई से कोई वास्ता ही नहीं है।

हम इस स्मारिका के माध्यम से समाज के सामने अपने महापुरुषों का गौरव गाथा प्रस्तुत कर रहे हैं। पाठकों से आग्रह है कि इस पर अपने सहमति, राय लेखक तक जरुर भेजें।

धन्यवाद!

- हरीश पांडल

लेखक / संपादक मंडल की ओर से GSS का आभार

गुरुबालकदास जी के शहादत से संबंधित शहादत गाथा को दुनिया के सामने प्रस्तुत करने के लिए हमने विभिन्न प्रचार माध्यमों से लेख, विचार, ऐतिहासिक जानकारी, फोटो, कार्टून, गीत, कविता, नाटक व कहानी मंगाया लेकिन काफी खेद के साथ बताना पड़ रहा है कि अपेक्षित जानकारी किसी ने हमें नहीं भेजा, चूंकि हमें उनके शहादत से संबंधित जानकारी बहुत अल्पमात्रा में था। हमने कई सतनामी पंड़ितों, चौकहारों, कथाकारों व समाज प्रमुखों से संपर्क किया, उन सभी ने अलग-अलग शब्दों में यही कहा कि, गुरुबालकदास जी ने सतनाम सेना बनाया था। स्थान-स्थान पर अखाड़ा का प्रशिक्षण होता था, जहां खड़ैत तैयार होते थे। हाथी, घोड़े की सवारी करते थे, और रावटी लगाते थे तथा रामत घुमते थे। जब हमने उनके शहादत गाथा को जानना चाहा तो बहुत से लोगों को आज भी पता नहीं है कि गुरुबालकदास शहीद हुए थे। उनके शहादत के विषय में विभिन्न लोगों द्वारा इस तरह की बातें बताई गई जैसे (1) गुरुबालकदास जी औराबांधा में रावटी लगाये थे। जब वे रात्रि विश्राम कर रहे थे, तो उनके ऊपर हमला किया गया और मार दिया गया (2) जहां उनके ऊपर हमला किया गया उस क्षेत्र स्थान में घांस भी नहीं उगता आदि, जब उनके हत्या के कारणों पर उनसे जानकारी लेना चाहा तो किसी ने भी संतोषजनक उत्तर नहीं दिया। सभी ने घुमा-फिरा कर एक उत्तर दिया जिसका सारांश इस प्रकार निकलता है, कि गुरुबालकदास वीर योद्धा थे। उनके कार्यो से जातिवादी-सामंती ब्राम्हण-ठाकुर जलते थे। क्योंकि वे उनको सामने से नहीं मार सकते थे, इसलिए उन्होंने रात में अचानक धोखे से हत्या किया। इसके अलावा उनके हत्या के मूल कारणों को नहीं बता सके।

तब हमने पत्रिका प्रकाशन को किसी अन्य रूप में प्रस्तुत करने का विचार किया। हमने तय किया कि हम गुरूघासीदास सेवादार संघ (GSS) द्वारा प्रकाशित GSS कैडर पाठ्यपुस्तिका को अपना संदर्भ ग्रंथ बनाकर 'स्मारिका' प्रकाशित करेंगे, क्योंकि गुरुबालकदास जी से संबंधित विवरण GSS से अधिक किसी के भी पास नहीं है।

इस संबंध में हमने साहेब लखन सुबोध GSS के केन्द्रीय संयोजक और लेखक GSS कैडर पाठ्यपुस्तिका से संपर्क किया। इस पर उन्होंने हमें सहयोग का आश्वासन किया और पत्रिका में GSS कैडर पाठ्यपुस्तिका का संदर्भ देने का भी सुझाव दिया, इससे हमारा राह काफी आसान हो गया।

इस सहयोग व मार्गदर्शन के लिए हम साहेब लखन सुबोध जी और गुरुघासीदास सेवादार संघ (GSS) के आभारी हैं, जिनके सहयोग व समर्थन के फलस्वरूप यह 'स्मारिका' आपके हाथ में हैं।

भवदीय

कुमार (रामकुमार लहरे)

दिनांक :16.03.2018

स्थानः बिलासपुर (छ.ग.)

गुरुबालकदास शहादत दिवस







साथियों, गुरुबालकदास शहादत दिवस 'स्मारिका' आपके हाथों में है। इसके प्रकाशन का एकमात्र उद्देश्य गुरुबालकदासजी के शहादत गाथा को जन-जन तक पहुंचाना है। जिसे इतिहास में दफन कर दिया गया है। बहुत से लोगों को लगता है और वे सार्वजनिक रुप से कहते पाये जाते हैं कि हमें गड़े मुर्दे नहीं उखाड़ना चाहिए। वे ऐसी बातें जाने -अनजाने लोक दमनकारियों के बहकावे में आकर कहते हैं, अगर हम अपने उन महानायकों के शहादत गाथा को सामने नहीं लायेंगे तो उन लोक समाज को कैसे पता चलेगा कि किन लोगों ने हमारे सुख व उज्जवल भविष्य के खातिर अपने प्राणों का परवाह नहीं कर अपना शहादत दिया जो अनजाने में अपने हितैषी शहीद के हत्यारों और अपने शत्रुओं को विचारों व कार्यों से मजबूत बना रहे हैं। इस तरह से अपना वर्तमान और आने वाली पीढ़ी का भविष्य अंधकारमय व कष्टप्रद होने का भयावह आधार अपने ही हाथों बना रहे है।

संसार में सभी देश के लोग अपने शहीदों का स्मरण करते हैं और उनके शहादत दिवस पर भव्य आयोजन करते है। हमें गुरुबालकदासजी के शहादत पर गर्व होना चाहिए और साथ ही अपने दोस्त व दुश्मन की पहचान भी।

भूमिका / प्रस्तावना

मध्यभारत का सोनाखान क्षेत्र की धरती में सिर्फ सोना ही नहीं पाया जाता बल्कि यहां सोने के साथ ही पांच अमूल्य हीरे भी हुए हैं और वे हीरे हैं गुरुघासीदास, अमर दास, वीरनारायण सिंह, गुरुबालकदास और सहोद्रा माता, यहां से निकलने वाले जोक नदी के पानी-पीकर ही इन जन-नायकों ने जातिवादी-सामन्ती-साम्राज्यवादी गठजोड़ का मुकाबला किया। इन्हीं अमूल्य हीरों में से एक थे सतनाम आंदोलन के महानायक महानक्रांतिकारी सतनाम के रक्षक अमरशहीद गुरुबालकदास जी।

विश्व में बहुत से ऐसे लोग हुए हैं जो अपने समय में अपने विचारों व कार्यो से समाज में परिवर्तनकारी भूमिका निभाते है। जो शोषित पीड़ित जनता व मानवता के हित में होता है। लेकिन कुछ स्वार्थी व दमन-शोषणकारी तत्व उनका विरोध करती है। ये तत्व कहीं ज्यादा प्रभावकारी होता है। तो कहीं कम, लेकिन ऐसे तत्व विश्व के अधिकांश स्थानों में पाये जाते है। हम भारत के परिपेक्ष्य में देखते है, तो ऐसे तत्व जो लोक दमन से जनाकांक्षा को कुचलते हैं, काफी संगठित आक्रामक व प्रभावशाली उपस्थिति दिखाते हैं। ये तत्व भारत में हजारों सालों से लगातार जनता में फूट पैदाकर समाज को कमजोर करते आये हैं। अपने स्वार्थ के लिए मेहनत करने वालों को नीच व हेय की दृष्टि से देखते हैं और उन्हीं के दम पर स्वयं संसार के सभी सुख-वैभव का उपभोग करते है। ऐसे ही शक्तियों के खिलाफ गुरुघासीदास के नेतृत्व में मध्यभारत के छत्तीसगढ़ क्षेत्र में सन् 1820 ई. में लोगों ने एक महान सतनाम आंदोलन प्रारंभ किया।[1] इस आंदोलन के फलस्वरुप लोगों ने अपने संपत्ति व स्वाभिमान की रक्षा की।

सन् 1850 ई. में गुरुघासीदासजी के बाद[2] सतनाम आंदोलनकारियों ने बालकदास को अपना प्रमुख बनाया। गुरुबालकदासजी में गुरुघासीदास के विचारों व कार्यो को पूरी गति के साथ आगे बढ़ाया। उनके कार्यो से जातिवादी-सामंती तत्वों में खलबली मच गया और सन् 1860 ई. में उनकी हत्या कर दिया गया।[3] ऐसे महान क्रांतिकारी अमरशहीद के महान शहादत को स्मरण व नमन् करना हमारा फर्ज है।

1. GSS कैडर क्लास पाठ्य पुस्तिका द्वितीय संस्करण, अक्टूबर 2012, लेखक लखन सुबोध, पेज 60, पैरा 3, पेज 63, पैरा 3 के अनुसार
2. वही पेज 215, पैरा 2 के अनुसार
3. वही पेज 214, पैरा 1 के अनुसार

शहादत गाथा
(17 मार्च 1860ई. की स्मृति में)

गुरुबालकदास जी मध्यभारत के वर्तमान छत्तीसगढ़ राज्य के मुंगेली जिला मुख्यालय से 8-10 किलोमीटर दूर ग्राम - औराबांधा के तारिख 16 मार्च सन् 1860 ई[1] की रात को रात्रि विश्राम कर रहे थे कि अचानक सैकड़ों की संख्या में हथियारबंद समूह ने उनको जान से मारने के उद्देश्य से प्राणघातक हमला कर दिया।[2] सुरक्षा में तैनात सुरक्षा दस्ता ने हमलावरों के विरुद्ध मोर्चो संभाल लिया रात कई घण्टे तक उनके अंगरक्षकों ने हमलावरों को मुहतोड़ जवाब दिया। स्वयं गुरुबालकदास ने भी उनका डटकर मुकाबला किया। हमलावरों ने सुनियोजित व संगठित होकर गुरुबालकदासजी को लक्ष्य बनाकर हमला किया था। औराबांधा गांव किसी दो छोटे देशों के बीच भयंकर युद्धक्षेत्र की तरह हो चुका था। गुरुबालकदास के सुरक्षा दस्ते[3] के प्रमुख सरहा और जोधाई सहित सभी अंगरक्षकों ने अपने पूरे क्षमता और युद्ध कौशल से हमलावरों को छट्ठी का दूध याद दिला दिया। चूंकि दुश्मनों की संख्या बहुत ज्यादा था और उनका लक्ष्य सिर्फ गुरुबालकदास था। हमला कई बार किया गया गुरुबालकदास लड़ते-लड़ते घायल हो चुके थे।

हमलावरों को काफी नुकसान उठाना पड़ा था। इसलिए अंत में उनको भागना पड़ा सभी संघर्षरत खड़ैत एक स्थान पर इकट्ठे हुए। उन्होंने गुरुबालकदास को सतनाम आंदोलन का प्रशासनिक मुख्यालय भंडारपुर ले जाना चाहा और वे औराबांधा से भण्डारपुर की ओर ले जाने लगे।[4] कुछ दूर जाने के बाद गुप्तचरों ने खबर दिया कि गुरुबालकदास को भण्डारपुर ले जाना उचित नहीं होगा क्योंकि ऐसा अफवाह है, कि वहां मौजूद लोग उनको वहां जीवित या मृत किसी भी स्थिति में नहीं देखना चाहते। सुरक्षा दस्ता के लोग आश्चर्यचकित हो गये क्योंकि औराबांधा में हुए घटनाक्रम की जानकारी इतना जल्दी भण्डारपुर पहुंचने और वहां से नकारात्मक प्रतिक्रिया आने की उम्मीद किसी को नहीं थी। इसके अलावा गुरुबालकदास जी के रहते और किसी को सतनाम आंदोलन का प्रमुख नहीं बनाया गया था, तो भण्डारपुर से किसने व किस अधिकार से गुरुबालकदासजी का भण्डारपुर प्रवेश प्रतिबंधित किया। सुरक्षा दस्ता भण्डारपुर जाने वाले रास्ते को बदलकर सतनाम आंदोलन का एक अन्य महत्वपूर्ण केन्द्र नवलपुर (वर्तमान बेमेतरा

1. GSS कैडर क्लास पाठ्य पुस्तक द्वितीय संस्करण, अक्टूबर 2012, लेखक लखन सुबोध, पेज 214, पैरा 1 के अनुसार
2. वही, पेज 212, पैरा 5 के अनुसार
3. वही, पेज 214, पैरा 1 के अनुसार
4. वही, पेज 214, पैरा 1 के अनुसार

जिला मुख्यालय के 6 किलोमीटर निकट का स्थान) जाने लगा। लेकिन नवलपुर पहुंचने के 8 किलोमीटर पहले कोसा[1] नामक गांव में 17 मार्च को गंभीर रुप से घायल गुरुबालकदासजी की मृत्यु हो गयी। अंगरक्षकों ने इतनी सूचना नवलपुर में मौजूद सतनाम आंदोलन के एक अन्य महानायक साहेब भुजबल महंत को दिया।

साहेब भुजबल महंत स्वयं अपने खड़ैतों को लेकर कोसा पहुंचे और गुरुबालकदासजी के मृत शरीर को नवलपुर[2] ले आये। यहां सतनाम आंदोलनकारियों ने उन्हें अंतिम सलामी दिया। उसके बाद ससम्मान उनके मृत शरीर को अंतिम कफन -दफन किया। इस तरह गुरुबालकदासजी अपने जिंदा रहते तक लोक समाज के मानवाधिकार, रोटी और सम्मान की रक्षा में जातिवादी सामन्ती तत्वों से संघर्ष करते हुए, 17 मार्च सन् 1860 ई.[3] को शहीद हो गये।

❖ अपनी पहली जीत के बाद सुस्त मत पड़ो क्योंकि अगर आप दूसरी बार विफल होते हैं, तो कई लोग यह बात कहने को बेताब हो जायेंगे कि आपको पहली जीत 'इत्तेफाक' से मिली थी।

❖ सपने वो नहीं जो हम सोते वक्त देखते हैं, सपने वो जो हमें सोने नहीं देते।

- डॉ.ए.पी.जे.अब्दुल कलाम

❖ जी.एस.एस.ने हमें गुरुघासीदास जी के सतनाम आंदोलन की सच्चाई बताया, गुरुबालकदास जी की वीरता बताई और यही वो सपने हैं जो हमें सोने नहीं दे रहे हैं। ऐसा आंदोलन फिर कब होगा जिससे जाति-वर्ण व्यवस्था को खत्म करने हम सभी एक मंच पर हों।

- हरीश पांडल (जीएसएस कैडर)

❖ एक दिन एक व्यक्ति ने न्यूटन के कोट की छेद की तरफ देखते हुए इशारा करते हुए ''न्यूटन साहब इस छेद से आपकी गरीबी, निर्धनता बाहर झांक रही है।''

'' नहीं' आपकी मूर्खता अंदर प्रवेश कर रही है'' न्यूटन सर ने कभी अमीरी-गरीबी को महत्व नहीं दिया।''

संकलन-हरीश पांडल (जीएसएस कैडर)

1. GSS कैडर क्लास पाठ्य पुस्तक द्वितीय संस्करण, अक्टूबर 2012, लेखक लखन सुबोध, पेज 214, पैरा 1 के अनुसार
2. वही, पेज 214, पैरा 1 के अनुसार
3. वही, पेज 214, पैरा 1 के अनुसार

हत्या की पृष्ठभूमि:-

1. आदिवासी राजसत्ता सन् 1741 ई. के पूर्व :-

सतनाम आंदोलन के महानायक गुरुबालकदासजी के हत्या के पूर्व राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक परिस्थितियों पर निगाह डालने से हमें पता चलता है कि सन् 1741 ई. के पूर्व इस क्षेत्र में स्थानीय आदिवासी सत्ता कायम थी। रतनपुर का शासक नाममात्र का टेक्स लेता था जिससे वह केंद्र में मुंगलों को लगान दे सके। मुगल भी रतनपुर के राजा से नाममात्र लगान लेते थे, इसके लिए कभी उन्होंने रतनपुर को परेशान किया हो ऐसा कहीं कोई उल्लेख नहीं मिलता है। यह क्षेत्र शांत था इसलिए रतनपुर को कोई बड़ी सेना का भी आवश्यकता नहीं था। स्थानीय लोक-समाज भी खुश और शांतिप्रिय था। लोगों में समानता का भाव था समाज प्रकृतिपूजक था और जातिवाद ऊंचनीच की भावना नहीं था। धार्मिक, असहिष्णुता या कट्टरता नहीं था।[1]

2. मराठा आक्रमण सन 1741ई. व सन 1820ई. के पूर्व

सन् 1741ई.[2] में मराठों ने छत्तीसगढ़ में आक्रमण किया। रतनपुर का राजा बीना युद्ध किये आत्मसमर्पण कर दिया व सत्ता मराठों को सौंप दिया। पेशवाशाही मराठों ने सोनाखान को छोड़कर सभी स्थानों पर अपना कब्जा कर लिया। इसके साथ ही अपने जातिवादी सामन्ती-धर्म-संस्कृति को भी शक्ति के बल पर पूरे ताकत से लागू किया प्रकृति पूजक आदिवासी शासकों / जमीदारों को अपने देवी-देवताओं ईश्वर को मानने के लिए बाध्य किया। समाज में ऊंचनीच छोटा-बड़ा, प्रभुवर्ग को प्रमाण करने, मेहनत करने वालों को हेय दृष्टि से देखने तथा दूसरों के मेहनत पर सुख भोगने वालों को सम्मानित करने, अभिवादन में जयजोहार के स्थान पर जयराम कहने, जमीनों पर कब्जा कर भू-स्वामियों को भू-दास बनाकर उनके ऊपर भारी भरकम टैक्स लगाया गया, जिसे कठोरता से वसूला जाता था। जमीनों को अपने लोगों को ठेका में दे दिया। औरतों के ऊपर अन्याय-अत्याचार किया जाने लगा। अलौकिकता और ईश्वरभक्ति में मुक्ति का झूठा उपाय लोगों को बताकर लोगों को मानसिक रुप से भी कमजोर किया जाने लगा। इस प्रकार स्थानीय लोक समाज के उपर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा।[3]

3. महान सतनाम आंदोलन (सन्1820ई.)

ऐसी ही परिस्थितियों में सन् 1820 ई. से गुरुघासीदास जी के नेतृत्व में महान सतनाम आंदोलन प्रारंभ हुआ। जिसे सोनाखान के राजा रामराय और आदिवासियों ने सहयोग प्रदान किया यह आंदोलन काफी तेजी से बढ़ा। इस आंदोलन ने जातिवादी-सामन्ती तत्वों को खदेड़ना शुरु कर दिया।[4]

हजारों गांवों में लोगों ने अपनी खोई हुई भूमि व सम्पत्तियों पर मराठों से छिनकर कब्जा कर लिया। विभिन्न जाति समूहों में बिखरे लोगों ने एक होकर संघर्ष किया और अपने पूर्व के जाति-बंधनों को तोड़कर एक नीति सिद्धांत को स्वीकार किया। आपस में समानता भाईचारा का माहौल बना। स्त्रियों की दशा में सुधार-हुआ कई कुप्रथाओं व देवी-देवताओं ईश्वरवाद का त्यागकर सतनाम को स्वीकार किया गया।

---

1. GSS कैडर क्लास पाठ्य पुस्तक द्वितीय संस्करण, अक्टूबर 2012, लेखक लखन सुबोध, पेज 26, पैरा 3 के अनुसार
2. वही, पेज 25, पैरा 5 के अनुसार
3. वही, पेज 26,27,28,29,30 व पेज 145, पैरा 1 के अनुसार
4. वही, पेज 145, पैरा 2, पेज 164, पैरा 1,2, व 3, पेज 147, पैरा 1 के अनुसार

4. गुरुबालकदास जी का कार्यकाल (सन् 1850 ई. से)

सन् 1850ई. में गुरुघासीदासजी के बाद सतनाम आंदोलनकारियों ने बालकदास को अपना प्रधान गुरु / मार्गदर्शक चुना।[1] गुरुबालकदरास ने पूर्व की नीति जारी रखा।[2] जिससे जातिवादी, सामन्ति तत्वों में निराशा हताशा व भय फैल गया क्योंकि वे काफी सीमित क्षेत्रों में सिकुड़ चुके थे, छत्तीसगढ़ के मैदानी भागों में 50 प्रतिशत से भी अधिक क्षेत्रों से उन्हें मार भगाया गया था, और बाकी क्षेत्रों में भी उनकी स्थिति सुरक्षित नहीं था, वहां भी संघर्ष चल रहा था और खदेड़े जाने का भय बना हुआ था। सोनाखान रियासत में कब्जा नहीं कर पाये थे। सोनाखान के सैनिक छापामार युद्ध[3] लड़कर अपने क्षेत्र को सुरक्षित रखे हुए थे। सोनाखान के अलावा अन्य आदिवासी क्षेत्रों में उन्होंने वहां के शासकों / जमींदारों के ऊपर तो प्रभाव जमा लिया था, लेकिन आम लोक समाज में उन्हें मान्यता नहीं दिया गया था, हालांकि उनके मुखिया शासक / जमीदारों ने पेशवाशाही मराठों के अधीनता को स्वीकार कर लिया था, और उनके धार्मिक अनुष्ठानों संस्कृति-विचारधारा को जोर-शोर से अपनाये हुए अपने आदिम संस्कृति को खत्म करने पर तुले हुए थे।

5. छत्तीसगढ़ में सत्ता परिवर्तन:-

''नागपुर राज्य के शासक रघुजी तृतीय की लंबी बीमारी के बाद 11 दिसम्बर 1853 में मृत्यु हो गई। ब्रिटिश रेजीडेंट मि. मिन्सल (जो उनकी मृत्यु के समय नागपुर में उपस्थित थे, ने केन्द्रिय सरकार के पास राजा की मृत्यु की सूचना प्रेषित किया। बहुत सारी घटना परिघटना के बाद इस राज्य को ब्रिटिश साम्राज्य में विलिन कर दिया गया) इस उल्लेखित अवधि में छत्तीसगढ़ के अंतिम मराठा सूबेदार गोपालराव आनंद थे। उन्होंने अपना शासन भार 1 फरवरी 1855 ई. को ब्रिटिश डिप्टी कमिश्नर चार्ल्स सी. इलियट को सौंप दिया। उनका अधिकार क्षेत्र वही था, जो 1818 में मराठों की पराजय और अंग्रेजों को विजय के बाद छत्तीसगढ़ में सूबेदार प्रथा के तहत मि.एगन्यू को था। हालांकि तब और अब में परिस्थितियाँ बदली हुई थी। डिप्टी कमिश्नर को प्रशासन के कार्य में सहयोग देने के लिए एक सहायक कमिश्नर की भी नियुक्ति की गई। इसके सिवाय अतिरिक्त सहायक कमिश्नर की नियुक्ति प्रावधानिक था। जिसे मूल भारत निवासी के लिए आरक्षित रखा गया। इसी के तहत रायपुर में सूबेदार गोपालराव आनंद एवं बिलासपुर में मोईबुल हसन को सहायक कमिश्नर के रुप में नियुक्त किया गया।[4]''

6. सन् 1857 ई. का देशी रजवाड़ों का विद्रोह :-

'' इसी दरम्यान सन्1857 में सैनिक गदर प्रारंभ हुआ। (जिसे 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम कहा जाता है) हालांकि इसे स्वतंत्रता संग्राम के रुप में सभी इतिहासकार नहीं मानते। दरअसल यह देशी राजाओं का अपने राज्य बचाने अंग्रेजों के खिलाफ सैनिक विद्रोह था। अंग्रेजी हुकूमत ने इसे तत्परता से असफल कर दिया। अंग्रेजों की ओर से सामान्य जनों के परिवारों से भरती हुए सैनिक जवानों के यथा-महार रेजीमेंट, सिक्ख रेजिमेंट, गोरखा रेजिमेंट आदि लड़े और अंततः ब्रिटिशों की जीत व देशी रजवाड़ों की हार हुई।[5]''

---

1. GSS कैडर क्लास पाठ्य पुस्तक द्वितीय संस्करण, अक्टूबर 2012, लेखक लखन सुबोध, पेज 205, पैरा 5, पेज 206, पैरा 2 व पेज 210, पैरा 1 के अनुसार
2. वही, पेज 210, पैरा 2 के अनुसार
3. वही, पेज 30, पैरा 3 के अनुसार
4. वही, पेज 210 पैरा 3 व पेज 211, पैरा 1
5. वही, पेज 211, पैरा 2

7. वीर नारायण सिंह का शहादत

[1] देशी रजवाड़ों-सामंतों एवं उनके पिट्ठूओं के षडयंत्र सांठ-गांठ से अंग्रेजी हुकूमत ने जातिवादी-सामंती तत्वों के खिलाफ लोक-समाज के लिए संघर्ष करने वाले सोनाखान के आदिवासी लोकनायक वीरनारायण सिंह के लोक समाज को कुचलने का काम किया। वीरनारायण सिंह लोक समाज के लिए संघर्ष करते हुए 10 दिसम्बर सन 1857 ई.को शहीद हुए। इससे गुरुबालकदास व सतनाम आंदोलनकारियों को अपने सबसे विश्वसनीय मित्र व सहयोगी से हाथ धोना पड़ा।

8. हत्या का मुख्य/मूल कारण व मालिक मकबूजा कानून

''अंग्रेजी शासन ने व्यस्थित तौर पर राज-काज करने के लिए भूमि बन्दोबस्त को नया स्वरुप प्रदान करने, नए आदेश प्रसारित किए। इसके पहले गांवों का सीमांकन भूराजस्व की अनियमितता एवं भू अधिकार-कब्जा आदि सबकुछ अस्त-व्यस्त था। अंग्रेजों ने जमीनों पर काबिज लोगों के व्यवस्थित रिकार्ड रखने के लिए मालिक मकबूजा कानून लागू किया। इस कानून के अनुसार जो आदिम काश्तकार (पुराने काश्तकारों को जिन्हें आदिम काश्तकार, आदिम जोतदार एवं वंश परम्परागत काश्तकार कहा जाता था) इस कानून में यह प्रावधानित था कि 1840ई. से जो अपनी भूमि पर काश्तकारी करते थे उन्हें पूर्ण स्वामित्व अधिकार अर्थात मालिक मकबूजा हक प्रदान करने का प्रावधान था। अब वे बंदोबस्त अवधि में बेदखल नहीं के जा सकते थे। जब तक विशेष परिस्थितियों में अदालती कार्यवाही द्वारा ऐसा निर्णय न लिया जायें इन सभी के लिए अंग्रेजी शासन ने पहली बार प्रत्यक्षतः भूमि कब्जा के आधार पर जमीनों का सर्वे करके भूबंदोबस्त रिकार्ड (लेण्ड रेवेन्यू सेटेलमेंट रिकार्ड) बनाने का निर्णय लिया। इस निर्णय से विशेष परिस्थितियों का निर्माण हुआ। इस कानून में जो बात महत्वपूर्ण है वह यह कि 1840 ई. से जो अपनी भूमि पर काबिज है उसे शासन द्वारा काबिज काश्तकार मानकर उन्हें मालिक मकबूजा हक देने का था।

पाठकों को याद होगा कि सतनाम आंदोलन से जिन भू-दासों ने जमीनों पर कब्जा किये थे। वह इस कानून से सरकारी तौर पर अधिकृत रूप से आदिम काश्तकार माने जाते। इससे सतनाम लोक दमनकारी तत्वों में खलबली मच गई क्योंकि वे यह आश लगाए थे कि एक न एक दिन वे सतनामियों को बेदखल करके फिर से भूदास बनायेंगे, लेकिन अंग्रेजी सरकार ने उनके मालिकाना हक को स्वीकार कर लिया तो फिर उन्हें बेदखल करना नामुमकिन हो जाएगा। वे अपनी आंखों से देख चुके थे कि बड़े-बड़े राजाओं, महाराजाओं को परास्त कर (1857 गदर में) अंग्रेज विजयी हुए थे और उनके राज में सूर्य कभी डूबता नहीं था। अर्थात दुनिया के सभी दिशाओं में अंग्रेजी हुकूमत थे। जब कभी रात होता था तो वहीं कहीं दिन हुए स्थान पर भी उनका राज होता था।

यहां पर इस बात का उल्लेख कर दें कि अंग्रेजी प्रशासन ने भू-बंदोबस्त के लिए जो नीति अपनाई थी और उसमें अधिकारियों को यह निर्देशित किया गया था कि यदि कोई विवाद होता है तो स्थानीय तौर पर जनसमुदाय में मान्य प्रमुखों की राय-मशवरा से उचित निर्णय किया जाये। इसके तहत लोक प्रशासन के प्रमुख अधिकारीगण (ज्ञात हो कि उस समय के स्थानीय अधिकारी, तहसीलदार, नायब तहसीलदार जिनका पद मूल भारतीय निवासियों के लिए सुरक्षित रखा जाता था और उनका ओहदा आज के कलेक्टर-कमिश्नर की तरह का था) कलेक्टरी व्यवस्था तो बाद

1. GSS कैडर क्लास पाठ्य पुस्तक द्वितीय संस्करण, अक्टूबर 2012, लेखक लखन सुबोध, पेज 211, पैरा 4 व गोंडवाना स्वदेश, दिसम्बर 2017, पेज 04-10 आज की पीढ़ी और वीनारायण सिंह की वसीयत लेखक शंकरगुहा नियोगी के अनुसार

में शुरु हुआ। गुरुबालकदास द्वारा किसी विवादित मामले में उचित निर्णय देने से उनकी स्थिति एक राजा न्यायाधीश की तरह हो गयी थी। इसलिए आम जन उन्हें सम्मान से 'राजागुरु' कहते थे।[1]

उपरोक्त विवरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि सतनाम आंदोलन से प्राप्त हजारों-हजार एकड़ भूमि पर कब्जा करने के उद्देश्य में गुरुबालकदासजी के कारण अवरोध हो रहा था। इसी कारण से ही जातिवादी-सामंती तत्वों ने राष्ट्रव्यापी षडयंत्र कर गुरुबालकदासजी के हत्या का कारण बने। अगर उन्होंने हत्या नहीं किया होता तो आज भी हजारों गावों में सतनामियों का भूमि और संपत्ति होता। इस प्रकार अंग्रेजों का मालिक मकबूजा कानून से व्याप्त दहशत के कारण सतनामी विरोधी तत्वों ने यह दुःसाहसिक कदम उठाया।

हत्या का षडयंत्रः–

भारत में हजारों वर्षो से समाज में फूटडालकर जटिल जाति वर्ण व्यवस्था लागूकर विशाल मेहनतशील बहुसंख्यक जनसमुदाय को एक दूसरे से लड़वाकर बिना मेहनत किये संसार का सारा सुख-वैभव प्राप्त करने वाले लोक समाज को ईश्वर के नाम पर भयभीत कर ठगने वाले और अपने इसी कपट चाल के कारण राज करने वाले प्रभुवर्ग के सामने बड़ा गंभीर समस्या खड़ा हो चुका था। उनके हाथ से सत्ता छिना जा चुका था। रही-सही कसर अंग्रेजी सरकार द्वारा लाये गये मालिक मकबूजा कानून पुरा करने जा रहा था। उन्हें लगा कि अब भी अगर सतनाम आंदोलन को नहीं कुचला गया तो उनका अस्तित्व समाप्त हो जायेगा। क्योंकि भारत के अधिकांश क्षेत्रों में अंग्रेजों ने उनके हाथ से राजपाट अपने हाथ में ले लिया था।

जातिवादी-सामंती तत्वों ने राष्ट्रव्यापी षडयंत्र किया। मध्यभारत, उत्तर भारत तथा अन्य क्षेत्र के सैकड़ों हजारों की संख्या में अपराधियों[2], डकैतों तथा मुगलों और अंग्रेजों के भय से घर-सम्पत्ति गवां चुके लोगों को बुलाया गया और कहा गया कि जमीन और सम्पत्ति का मालिक अगर बनना है तो सतनामियों के नेता को मारना होगा। हजारों -हजार एकड़ जमीन का मालिक बनोगे।

इसके बाद भारतवर्ष के विभिन्न क्षेत्र के लोगों को बुलाया गया। उन्हें प्रशिक्षित किया गया इसके साथ-साथ उन्होंने अपने स्थानीय समर्थकों को भी तैयार रहने को कहा लेकिन संपूर्ण छत्तीसगढ़ में ऐसा कोई भी आदमी या समूह नहीं मिला जो गुरुबालकदास के उपर आक्रमण करने का साहस कर सकता क्योंकि उनको मालूम था कि सन् 1832 ई.[3] में अमरदास के शहादत के बाद भी सतनाम आंदोलन का गति कम नहीं हुआ। बल्कि लगातार तीव्र गति से आगे बढ़ा। इसलिए इस तरह का दुःसाहस किसी ने नहीं दिखाया। इस पर षडयंत्रकारियों ने तय किया कि बालकदास के हत्या के बाद उसके स्थान पर किसी अपने कठपुतली[4] आदमी को रखा जाय जिससे गुरुबालकदास के हत्या के बाद सतनामियों के भूमि और सम्पत्तियों पर कब्जा किया जा सके। और उसका विरोध भी न हो सके। जिससे उनका (षड्यंत्रकारियों का) मंसूबा पूरा हो सके।

और आखिर में षड्यंत्रकारी अपने योजना में कामयाब[5] हो गये ।

---

1. GSS कैडर क्लास पाठ्य पुस्तक द्वितीय संस्करण, अक्टूबर 2012, लेखक लखन सुबोध, पेज 212, पैरा 1 व 2
2. वही, पेज 231, पैरा 4 के अनुसार
3. वही, पेज 189, पैरा 3 के अनुसार
4. वही, पेज 213, पैरा 3 के अनुसार
5. वही, पेज 213, पैरा 4, के अनुसार

हत्या का परिणाम

गुरुबालकदास जी के हत्या का सतनाम आंदोलन पर तात्कालिक व दूरगामी प्रभाव पड़ा।

1. आगरदास का गुरुगद्दी पर बैठना

''गुरुबालकदास जी हत्या के बाद भंडार से आगरदास को गुरुगद्दी पर बैठाया गया, उन्होंने गुरुबालकदास जी हत्या व समकालीन परिस्थितियों में सतनाम समाज संगठन का साथ नहीं दिया। बल्कि सतनाम-समाज-संगठन की सर्वोच्च संस्था एवं उसकी संपत्ति पर अपना कब्जा करने विविध समाजघाती कार्य किये। जिससे सतनामियों को घातक परिणाम भोगना पड़ा।[1]''

2. सतनामियों के भूमि सम्पत्तियों पर कब्जा

''सतनाम आंदोलन के जन-प्रमुख-समाज-संगठन को दमित करने लोक दमनकारियों ने दंड-दमन-नीति को प्रमुख हथियार बनाया। तात्कालीन प्रशासन द्वारा भूमि में वास्तविक कब्जाधारियों के आधार पर जो भू-बंदोबस्त सर्वे तथा दस्तावेजों को बनाया जा रहा था। वहां दमनकारियों के गुण्डों ने जबदन अपना कब्जा दिखाकर-बताकर दस्तावेजों में अपना नाम लिखवाया जहां कहीं सतनामियों ने इसका विरोध किया उन्हें बुरी तरह मारपीट प्रताड़ित कर गांवों से खदेड़ दिया।

सतनामी जन अपनी नेतृत्वहीनता संगठन के अभाव में त्रस्त परेशान हो इधर-उधर पलायन करने पर मजबूर हो गए। कुछ विशेष स्थानों में जिन लोगों ने दमनकारियों के साथ होने की तामिरदारी किए उन्हें तामिरदारी करने के कारण छोड़ दिया गया। लेकिन कुछ ऐसे विशेष स्थानों में स्थानीय तौर पर ही सही अपनी जमीनों की रक्षा के लिए सतनामी जन मरने-मारने की स्थिति तक अपनी भूमियों पर अपना नाम दर्ज कराने में सफल रहे।[2]''

''सतनामियों के भूमि व सम्पत्तियों को उपरोक्त तरीके से छिना गया। इसके बाद भी ''चार्ल्स ग्रांट ने 262 गांवों पर सतनामियों की मालगुजारी बचे रहने का जिक्र संबंधित दस्तावेज में किया है।[3]''

इस प्रकार सतनामियों के हजारों-हजार एकड़ भूमि व बहुमूल्य सम्पत्तियों पर कब्जा कर आर्थिक रुप से कमजोर कर दिया गया।

3. सतनाम विचारधारा पर हमला

''केन्द्रीय नेतृत्वविहीन सतनामियों को स्थाई रुप से वास्तविक गुलाम बनाने के लिये मानसिक गुलाम बनाने का कार्य किया गया। सतनाम के मूल सिद्धांत नीति-विचार को अपने अनुरुप बताने के लिए विविध तरह के दमनकारी प्रयास किए। हिंदू-आर्यधर्म-पुराणों-शास्त्रों में जो अलौकिक-चमत्कारिक-मिथकीय बातें हैं। उसी के मुताबिक गुरुघासीदास की जीवनकथा को रचा गया, वे जानते थे कि सतनाम आंदोलन की बुनियाद सतनाम विचार धारा में ईश्वर स्वर्ग-नरक, भाग्य-भगवान, चमत्कार को नहीं मानते है। वे इसके लिए गुरुघासीदासजी को इतिहास से निकालकर ईश्वरीय माया-चमत्कार में बदलने का काम किए। वे जानते थे कि जब सतनामी अपने गुरु-आराध्य को चमत्कारी मानेगा तो स्वभावतः वह हिंदु देवी-देवताओं पुराण-शास्त्र कथाओं के चमत्कार कथा को भी मानेगा। इसलिए केन्द्रीय विचार

1. GSS कैडर क्लास पाठ्य पुस्तक द्वितीय संस्करण, अक्टूबर 2012, लेखक लखन सुबोध, पेज 218, पैरा 4
2. वही, पेज 220, पैरा 5,6 व पेज 221 पैरा 1
3. वही, पेज 221, पैरा 1

सूत्र-'सत ही तत है, तत ही सत है' की जगह 'ईश्वर ही सत्य है और सत्य ही ईश्वर है' की बातों को सुनियोजित ढंग से प्रचारित-प्रतिष्ठित किया गया। गुरुघासीदास के मूल सिद्धांतों को छिपाने के लिए यह उनका अमोघ अस्त्र रहा। इससे लोक संघर्ष की भावना एवं लोकसमाज की शक्ति-प्रतिष्ठा के स्थान पर ईश्वर की कृपा ही सब कुछ हैं यही भावना बनती और बनी भी लोकसमाज में सत्ता-सामंती वर्ग ने जो जुल्म ढाए। सभी बातों पर पर्दा पड़ जाता और ऐसा हुआ भी''[1]

सतनाम आंदोलनकारियों ने जिस ईश्वर ,स्वर्ग,-नरक, भाग्य-भगवान दैवीय चमत्कार के खिलाफ संघर्ष किया था। उन्हें दोबारा उसी का गुलाम बनाने का षडयंत्र कर विरोधी विचार धारा का व्यापक प्रचार-प्रसार किया गया।

4. स्त्रियों के समानता के मूल्यों का दमन

''सतनाम आंदोलन में नर एवं नारी समानरुप से शामिल हुए। सतनाम सिद्धांत नर-नारी में किसी भी तरह का भेदभाव के सख्त खिलाफ है इस विचार को दमन करने के लिए लोक दमनकारियों ने नेतृत्वविहिन सतनामियों को यह सिखाने का उद्यम चलाया कि (जैसा कि उनके धर्म कानून में मान्यता है) नारी, पापी, अपवित्र होती है। उन्हें दूर-छूर करने से ही वे ठीक रहती है।

सतनाम आंदोलन से नारियों के प्रति जो समानता का व्यवहार चला था। उसे नष्ट करने के लिए सतनाम आंदोलन के पूर्व की स्थिति में लागू किया गया। 'झेंझरी चौंका' का घृणित आयोजन जोर-शोर से फिर शुरु किया गया। जिज्ञासु पाठक आज भी कई स्थानों पर ऐसे हृदय विदारक घटनाओं को संबंधितों से जान-सुन सकते है।[2]''

5. सतनाम नीति-आंदोलन को तोड़ने जाति-पाति खेमेबाजी:-

सतनाम आंदोलन को दमन करने के लिए जितनी भी नीतियां अपनाई गई इनमें महत्वपूर्ण है सतनामियों में भीतर-घातियों की मदद से झूठ-लबारी फैलाकर अलग-अलग नाम से जाति समुदाय बनाकर आपस में घृणा व झगड़ा करवाना।[3] ''

(1) रामनामी

''पुराने बिलासपुर जिला के उन क्षेत्रों में (वर्तमान में मुख्यतः जांजगीर-चांपा, बलौदाबाजार के कुछ भागों में) जहां तुलनात्मक रुप से सतनाम संगठन मजबूत नहीं हो पाया था। उन क्षेत्रों में सतनाम-सिद्धांत विचार के विपरीत ''रामनामी''संबोधित एक अलग प्रकार की जाति बनाकर अलग-अलग किया गया। इस रामनामी प्रकल्प की शुरुआत लगभग 1888 ई. के आसपास मालखरौदा क्षेत्र से शुरु हुआ। इसके लिए काशी-प्रयाग के पंडों ने एक नाटकीय युक्ति निकाला समाज विरोधी कुछ भेदियों की मदद से एक किसान (चारापारा निवासी श्रीधर मंडल) को रात में निद्रावस्था में चकमा देकर उनके माथे पर 'राम-राम' शब्द किसी काले स्याही से लिखा गया और जब सबेरा हुआ तो भेदियों ने कहा कि मंडल के माथे पर कुछ लिखा है। यह क्या है? और यह कैसे हुआ? इस पर ढिढोरा पीटा गया, पूर्व नियोजित षडयंत्र के तहत काशी-प्रयाग के पंडे वहां पहुंचकर कहते बताते हैं कि स्वयं श्रीराम, श्रीधर मंडल के शरीर में विद्यमान हो गया है। पण्डे लोग पत्रा-विचार करने का ढोंग करते हुए कहा कि अब से श्रीधर मंडल एवं उनके सभी संबंधितों को अपने शरीर में राम का नाम अंकित (गोदना) करने से सभी का कल्याण होगा। तभी साक्षात रामनामी होने से बैकुंठ में जगह मिलेगा। और सभी बिगड़ी काम बनेगा। संक्षिप्त इस नाटकीय षडयंत्र के बाद लोगों को इस अभियान से जोड़ने विविध तरह के प्रयास किया जाने लगा।[4]''

1. GSS कैडर क्लास पाठ्य पुस्तक द्वितीय संस्करण, अक्टूबर 2012, लेखक लखन सुबोध, पेज 222, पैरा 1
2. वही, पेज 228, पैरा 5 व 6
3. वही, पेज 230, पैरा 2
4. वही, पेज 230, पैरा 3

इस प्रकार सतनामियत को दमित करने एक अलग कबीला बना दिया गया।

(2) सूर्यवंशी

''पामगढ़-मस्तूरी क्षेत्र के गांवों में सूर्यवंशी नाम से अलग जाति का संबोधन हुआ। इसके मुखिया पामगढ़ के बहोरिक पंडित रहे है। सन्1925 (तात्कालिक सी.पी. एण्ड बरार के गर्वनर मांटेग्यू बटलर के आदेशानुसार) ये शासनादेश से कि सतनामियों को सिर्फ सतनामी कहा जाए अन्य कोई सम्बोधन नहीं तभी लोकदमनकारियों ने इन क्षेत्रों के लोगों को कहा-समझाया-भटकाया गया कि, हमारा गुरु गुरुघासीदास नहीं उससे पहले के बड़े गुरु रविदास (मध्ययुग के इतिहास प्रसिद्ध संत रैदास) है और हम रविदास के मानने वाले हैं, इसलिए हमारा नाम रवि अर्थात् सूर्य से सूर्यवंशी होना चाहिए। इस तरह सतनामी सूर्यवंशी का भेद बनाकर दोनों को खूब लड़ाया-छकाया गया।[1]''

(3) कनौजिया

''एक और शोषित-पीड़ित जाति कनौजिया जिन्हें कनौज (कानपुर के आसपास का इलाका) से उन प्रभुता वर्ग (जब सतनाम आंदोलनकाल में एवं इसके आसपास के काल में सतनामी एवं सतनाम आंदोलन के पूर्व आदिवासी समुदाय इनकी प्रभुता नहीं मानते थे। इन्हें अपने भू-दास के रुप में लाया गया था। इनका कठोर शोषण उत्पीड़न होता था। ये लोग भी सतनाम आंदोलन से न जुड़ जाए इसलिए इन्हें भी रविदास को गुरु मानने वाले के रुप में 'सूर्यवंशी' कहा जाने लगा। चूंकि इन सूर्यवंशी भाइयों की भाषा-परंपरा (कस्टम) की पृष्ठभूमि कन्नौज से हैं[2]'' इसलिए इनको कन्नौजिया सूर्यवंशी कहा जाने लगा।

6. सतनामी व अन्य मित्र समूहों के बीच शत्रुता का षडयंत्र

(1) सतनामी-आदिवासी के बीच शत्रुता फैलाने का षडयंत्र

''सतनाम आंदोलन के समर्थन में सबसे ज्यादा सहयोग आदिवासी समुदाय से मिला। सतनाम संगठन-आंदोलन के शुरुआती दौर में सोनाखान राज से ही सतनाम-आंदोलन का केंद्रीय कमान-प्रशिक्षण केन्द्र बनाया गया[3]'' यह ऐसा कार्य था जो बिना आदिवासियों के सहयोग के असंभव था। चूंकि दमनकारी जानते थे कि सतनामी-आदिवासियों को आपस में लड़ाया नहीं जा सकता इसलिए उन्होंने रणनीति से काम लेते हुए ऐसा अफवाह फैलाया कि सोनाखान के राजा ने गुरुघासीदास को अपमानित व प्रताड़ित करने में कोई कसर नहीं छोड़ा। ऐसे ही अफवाह व किवदंतियों के चलते कई नामधारी सतनामी लेखकों/कवियों (जैसे मनोहरदास नृसिंह (श्री घासीदास नामायण) पं. सखाराम बघेल ''सत्यवंशी (अथ गुरुघासीदास चरित सत्यायण) राजमहंत नंकेसरलाल टंडन (सत्यवंश सतनाम धर्म ग्रंथ) सुकुलदास घृतलहरे (गुरुघासीदास समायण, मंगत रविन्द्र , प्रभात सागर) शंकरलाल टोडर (सतनामी और सतनाम आंदोलन) व नम्मूराम मनहर के पुस्तक में सोनाखान के राजा व गुरुघासीदास के बीच शत्रुता का वर्णन किया गया है[4]'' इससे दोनों समुदाय के बीच खाई पैदा हुआ।

1. GSS कैडर क्लास पाठ्य पुस्तक द्वितीय संस्करण, अक्टूबर 2012, लेखक लखन सुबोध, पेज 231, पैरा 2
2. वही, पेज 231, पैरा 3 वे पेज 232, पैरा 1
3. वही, पेज 136, पैरा 2
4. वही, पेज 142 व 143

(2) सतनामी-रावतों के बीच शत्रुता फैलाने का षडयंत्र

''सतनाम आदोलन में सबसे ज्यादा अहिरों का हाथ था। (जैसा कि इसे पूर्व उल्लेखित हैविट साहब रायपुर के प्रथम सेटिलमेंट आफिसर ने अपने रिकार्ड में उल्लेख किया है) इसलिए अब सतनामी व अहिरों (रावत-यादवों) को ऐसा लड़ाया जाय कि वे जहां कही भी रह रहें हो आपस में शत्रु के रुप में रहें''[1]।

सतनामी और रावतों को लड़ाने के लिए षडयंत्र किया गया तेलासीबाड़ा का सड़हादेव काण्ड कराकर उनका षडयंत्र सफल हुआ तेलासीबाड़ा में हुआ सड़हादेव काण्ड का नकारात्मक परिणाम यह हुआ कि छत्तीसगढ़ के मैदानी क्षेत्र का सबसे बड़ा मित्र रावत समुदाय से दुश्मनी हुआ। इसका व्यापक प्रभाव पड़ा जिससे सतनामियों के दुश्मन जातिवादी-सामंती तत्वों को बड़ा लाभ और लोक-समाज कमजोर हुआ। ये दोनों समुदाय के बीच आज तक स्थाई शत्रुता कायम है।

7. सतनाम धर्म स्थलों का गिरवी–बिक्री

''भण्डारपुर, तेलासीबाड़ा, गुढ़ियारीबाड़ा व बोड़सराबाड़ा तथा उनसे संबंधित हजारों एकड़ जमीन पर योजनाबद्ध तरीके से कब्जा किया गया।

सतनाम आंदोलन में जिन शोषित-पीड़ित जाति समूहों ने एका बनाकर लोकदमनकारियों के खिलाफ जो संघर्ष किया था। उन्हें दमित करने कई तरह के उपाय किए गए, जब भंडार में बैठे गुरुघंटाल लोकदमनकारियों के शरणागत हो गए तो वे स्वाभाविक रुप से शरण पड़े लोगों की तरह वे जगह-जगह पड़े मिले।[2]''

एक-एक करके सभी धर्मस्थल भंडारपुर का जैतखाम-गुरुद्वारा, तेलासीबाड़ा, बोड़सराबाड़ा, गुढ़ियारीबाड़ा जैसा प्रमुख धर्मस्थल गिरवी/बिक्री होते गया, साथ ही इनके संचालन के लिए इससे लगे हुए हजारों एकड़ जमीन भी बिकता चला गया। इसे बचाने के लिए कथित प्रमुख गुरुओं के द्वारा प्रयास न कर आम जनता ने आपस में सहयोग कर भंडारपुर के गुरुद्वारा को गिरवी से मुक्त कराया।

8. सतनामियों का पलायनः–

नेतृत्व विहीन सतनामियों का हताशा-निराशा में अन्यत्र पलायन

''इन सभी दमनकारी स्थितियों का सामना करते हुए आम सतनामी अपनी नेतृत्वहीनता पर आंसू बहाते जगह-जगह से यातना-प्रताड़ना सहते कष्ट भोग रहे थे। इसमें एक भयंकर अकाल ने आग में घी का काम किया। आम बुजुर्गों की यादों में बसे सन् 1897-98-99 का अकाल भयानक था। (जिसे बुजुर्गजन तिरपन-छप्पन के दुकाल कहते हैं) इस अकाल में जहां आमजनों ने भयंकर कष्ट भोगे, वहीं व्यापारी -महाजन मालामाल हुए। उसी समय के पलायन में सबसे ज्यादा सतनामी पलायन किये। असम के चाय बगान, कोइलारी-कलकत्ता आदि जगहों पर पलायन किए। उस समय बिलासपुर छत्तीसगढ़ के रेलवे स्टेशन में ऐसे पलायन को जाने मजदूर परिवारों के लिए एक डिपो बनाया गया था। जहां उनकी भरती-रवानगी का काम होता था। इस डिपो की जगह को आज भी बिलासपुर में डिपूपारा कहते हैं।

1. GSS कैडर क्लास पाठ्य पुस्तक द्वितीय संस्करण, अक्टूबर 2012, लेखक लखन सुबोध, पेज 341, पैरा 1
2. वही, पेज 231, पैरा 3 वे पेज 233, पैरा 3

उसी काल खण्ड में बिहार के लोग बंगाल होकर समुद्र के रास्ते मारीशस, सूरीनाम आदि द्वीपों में गिरमीटिया (एग्रीमेंट का लोक अपभ्रंश गिरमीटिया) मजदूर परिवार गये। इनकी वंशज-श्रृंखला को जानकर आज मारीशस, सूरीनाम के भारतवंशी लोगों के बीच सम्पर्क-संवाद कायम हुआ है। लेकिन उस दरम्यान यहां से गए सतनामियों की पृष्ठभूमि की जानकारी देने-लेने वाला नेतृत्वकर्ता संगठन नहीं होने से सबकुछ अज्ञात है। सिर्फ असम, कोलकाता आदि में गये लोगों से जहां-तहां सम्पर्क है। मिनिमाता के पूर्वज भी (उनका मायका पक्ष) इसी दरम्यान पलायन कर गये लोगों में से थे। इस पलायन से छत्तीसगढ़ में सतनामियों की संख्या अनुपात में बहुत बड़ा अंतर आया। दमनकर्ता यही चाहते थे कि जैसा भी हो छत्तीसगढ़ में सतनामियत खत्म हो जाय।[1]''

इस प्रकार हमारे लाखों पुरखों के संघर्ष और शहादत से कि गये महान सतनाम आंदोलन के फलस्वरुप प्राप्त हुआ भूमि, सम्पत्ति, स्वाभिमान, एकता, भाईचारा, समानता व जातिविहीन समाज गुरुबालकदासजी के शहादत के बाद दमनकारियों के षड़यंत्रों से धीरे-धीरे खत्म होता गया। सतनाम दमनकाल अपने पूर्ण यौवनावस्था में है। और लोक-समाज सन्1820ई. के पूर्व स्थिति में आ गया है। सतनाम पुनर्जागरण का कार्यभार अब हमारे ऊपर है।

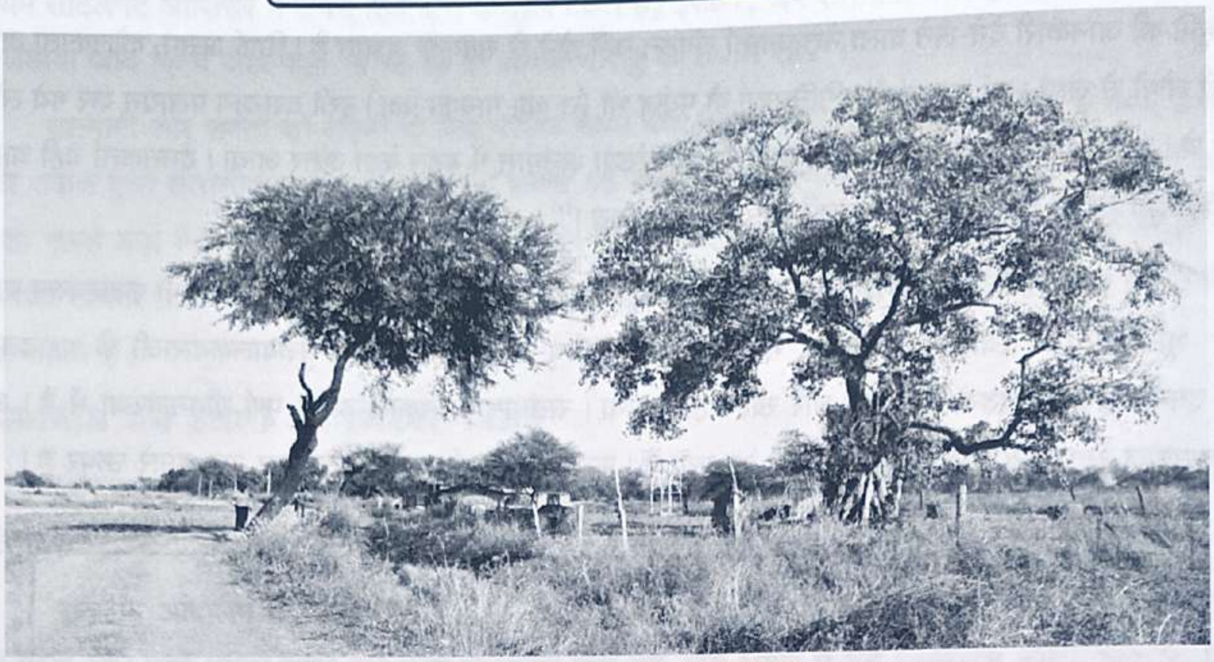
मूर्ख को उपदेश

नदी के तट पर एक विशाल बरगद का वृक्ष था। उसकी शाखाओं पर अनेक पक्षी अपने-अपने घोसले बनाकर आनंद से रहते थे। शीत ऋतु का मौसम था एक दिन दोपहर के पश्चात आकाश में बादल घिर आए। कुछ देर बाद घनघोर वर्षा होने लगी, सारे पक्षी उड़कर अपने-अपने घोसलों में दुबकने लगे, तभी कहीं से बहुत सारे बंदर (वानरों) का एक समूह वर्षा और शीत से बचने के लिए उस वृक्ष के नीचे आकर बैठ गये, ठंड के कारण सारे वानर बुरी तरह से कांप रहे थे, उन्हें देखकर पक्षियों को बड़ी दया आई, उन पक्षियों ने कहा-''वानर भाईयों' तुम लोग तो इतन बड़े-बड़े हो। तुम्हारी तुलना में तो हम बहुत ही छोटे हैं, फिर भी हम लोगों ने अपने चोंच से चुन-चुनकर अपने रहने के लिए घोसले बना लिए हैं। आप लोगों के तो हाथ-पैर दोनों हैं, तब भी आप लोग अपने लिए घर क्यों नहीं बना लेते? यह सुनकर वानरों को क्रोध आ गया। उन्होंने सोचा कि अपने घोसलों में वर्षा से सुरक्षित रहकर यह पक्षी हमारी खिल्ली उड़ा रहे हैं। बस फिर क्या था, वर्षा रुकी तो वे सभी वानर उस वृक्ष पर चढ़ गये और जो भी घोसला उनके हाथ आया, उसी को तोड़-मरोड़कर नीचे फेंक दिया। सही कहा गया है कि मूर्खों को उपदेश देना अपने लिए मुसीबतों को न्योता देना है।
सारांश- संख्या-बल होने से कोई ताकतवर नहीं होता, वह केवल भीड़ का हिस्सा होती है। उस संख्या को नेतृत्व देने वाला सेनापति चालाक और बुद्धिमान होना चाहिए, बंदरों के बीच कोई नेतृत्व करने वाला होता तो वे पक्षियों की उपदेश को बूरा नहीं मानते और उनका घोसला नहीं तोड़ते। समाज-संगठन में भी नेतृत्वकर्ता का अभाव है, इसलिए सही-गलत का फैसला नहीं ले पा रहे हैं।

- संकलित

1. GSS कैडर क्लास पाठ्य पुस्तक द्वितीय संस्करण, अक्टूबर 2012, लेखक लखन सुबोध, पेज 338, पैरा 1 व 2

शहादत संबंधित महत्वपूर्ण स्थलों का चित्र



औराबांधा (मुंगेली जिला मुख्यालय से 8-10 कि.मी.)
वह स्थान जहां उनके ऊपर प्राणघातक हमला किया गया था।



कोसा (बेमेतरा जिला मुख्यालय से 14 कि.मी.)
वह स्थान जहां उनका मृत्यु हुआ था।



नवलपुर (बेमेतरा जिला मुख्यालय से 6 कि.मी.)
वह स्थान जहां उनके मृत शरीर को दफनाया गया था।

शहादत दिवस क्यों मनाये ?

गुरुबालकदास जी ने अल्पायु से ही सतनाम आंदोलन में अपना बहुमूल्य योगदान दिया था, गुरुघासीदास जी के बाद सतनाम आंदोलनकारियों के संगठन ने बालकदास के कार्यो के आधार पर उनको गुरुघासीदाजी का उत्तराधिकारी व सतनाम आंदोलन का प्रधान चुना था। गुरुबालकदास जी उस पर खरा उतरते हुए सतनाम आंदोलन की गति को कम नहीं होने दिया, उसने सतनामियों के भूमि, सम्पत्ति, रोटी, सम्मान और मानवाधिकार की रक्षा की। उनको षडयंत्रकारियों ने अपनी ओर मिलाने का काफी प्रयास किया किया, लेकिन उन्होंने लोक समाज को ध्यान में रखा और आजीवन उस पर अमल भी किया।

गुरुबालकदास जी ने सतनाम के रक्षक की भूमिका निभाई जिसके कारण उनके जिंदा रहते मानवाधिकार विरोधी तत्व मानवता के खिलाफ कोई भी कार्यवाही नहीं कर पाये।

यही कारण है कि हम सब 17 मार्च के दिन को गुरुबालकदास जी का शहादत दिवस मनाते है।

शहादत दिवस का प्रारंभ

गुरुबालकदास जी का शहादत दिवस का प्रारंभ संगठित रुप से बड़े स्तर पर GVSS/GSS के द्वारा किये जाने का उल्लेख मिलता है। उसके पहले इस तरह का आयोजन नहीं किया जाता था। प्रारंभ के 2-3 वर्षो (1998-2000 के आसपास) GVSS द्वारा लघु गोष्ठी / बैठक किया गया एवं सार्वजनिक बड़े स्तर पर सर्वप्रथम GVSS/GSS ने ही औराबांधा जहां उनके उपर प्राणघातक आक्रमण किया गया था। वहां की मिट्टी को लाकर बिलासपुर जिला के मस्तूरी, बिल्हा विकासखण्ड के विभिन्न गांवों में यात्रा का आयोजन किया गया जिससे उनके शहादत के प्रति स्वाभिमान जागृत हुआ।

क्योंकि इससे पहले उनकी शहादत को लोग अपनी पराजय व कमजोरी समझकर आत्महीनता की भावना से ग्रसित थे, जिसे दूर करने के लिए GSS ने पहली बार सन 2001 ई. में तालापारा, बिलासपुर छत्तीसगढ़ में शहादत दिवस का आयोजन किया।



चित्र 1. गुरुबालकदासजी के शोध चित्र का लोकार्पण व शहादत दिवस, जरहाभाठा, बिलासपुर छ.ग. (2000) के उपलक्ष्य में साहेब लखन सुबोध जी, अध्यक्ष- GVSS/GSS व अन्य



चित्र 2- तालापारा बिलासपुर छ.ग. में गुरुबालकदास शहादत दिवस आयोजन (2001) के अवसर पर (बांये) साहेब लखन सुबोध जी अध्यक्ष- GVSS/GSS व अन्य



चित्र 3 - जैतखाम चौक, ग्राम-अमेरी, बिलासपुर (छ.ग.) गुरुबालकदास शहादत दिवस आयोजन (19 मार्च 2001) के अवसर पर (बांये से दूसरा) रामकुमार लहरे, अध्यक्ष-संयुक्त सतनामी मोर्चा व अन्य

शहादत दिवस पर प्रमुख कार्यक्रम व गतिविधियां :-

शहादत दिवस पर विभिन्न संगठनों के लोग सभा, रैली, मेला, संगोष्ठी व अन्य कार्यक्रम करते हैं। चूंकि सतनाम, धर्म-संस्कृति, विचाराधारा के प्रचार-प्रसार करने में GSS अग्रणी संगठन है। अतः प्रत्येक पहला गतिविधि GSS के नाम पर दर्ज है।

1. शहादत मेला स्थल मस्तूरी, बिलासपुर (छ.ग.)

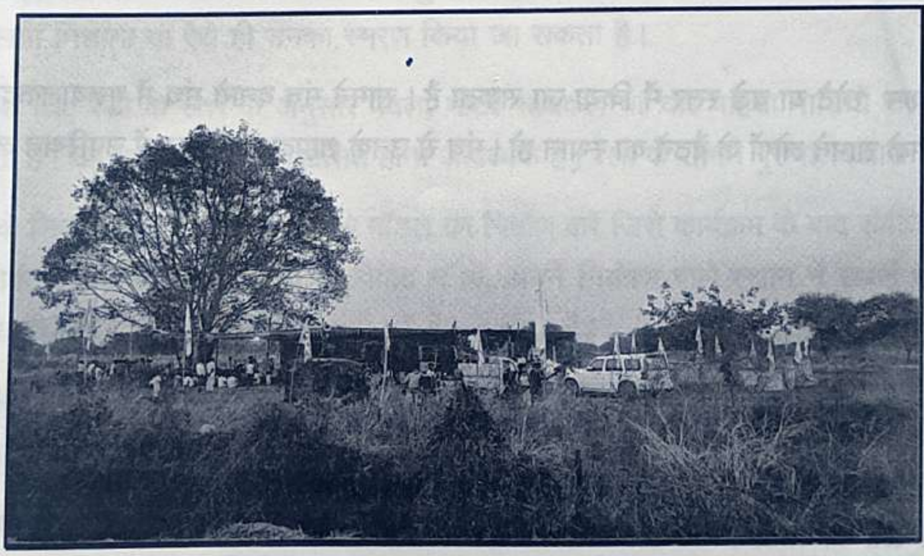
GVSS/GSS द्वारा औराबांधा के शहीदी मिट्टी को लाकर गोपीयापार तालाब मस्तूरी, बिलासपुर (छ.ग.) में प्रतीक स्थापित किया गया तथा वहां सन् 2002ई. में पहली बार मेला का आयोजन किया गया। वर्तमान में यहां मेला गतिविधि विभिन्न कारणों से रुका हुआ है।



गुरुबालकदास शहादत मेला स्थल, गोपियापार तालाब, मस्तूरी, जिला-बिलासपुर (छ.ग.)

2. समाधि स्थल नवलपुर बेमेतरा (छ.ग.)

GVSS/GSS के द्वारा गुरुबालकदासजी के मृत शरीर को जहां दफनाया गया उस स्थान का खोज किया गया तथा सन् 2008 से 26 मार्च को समाधि मेला का आयोजन प्रतिवर्ष किया जा रहा है।



गुरुबालकदास समाधि स्थल नवलपुर, जिला-बेमेतरा (छ.ग.)

3. जैतखाम चौक, अमेरी, बिलासपुर (छ.ग.)

यहाँ स्थानीय संगठन व GSS द्वारा प्रतिवर्ष शहादत दिवस का आयोजन किया जाता है।



सतनाम भवन, जैतखाम चौक, अमेरी, बिलासपुर (छ.ग.)

वर्तमान में GSS के अलावा अन्य संगठन भी शहादत दिवस पर विविध कार्यक्रम विभिन्न स्थानों में करते है।

शहादत दिवस कैसे मनाये?

गुरुबालकदास जी का शहादत दिवस विविध रुप में मनाया जा सकता है जैसे

1. **व्यक्तिगत या सामूहिक रूप से:-** समय प्रातः 08.00 बजे अपने घर में मौजूद जैतखाम -निशाना / सार्वजनिक जैतखाम या गुरुबालकदास जी के चित्र या दोनों के सामने एकत्रित होकर गुरुबालकदास के द्वारा लोकसमाज और पीड़ित मानवता के पक्ष में उनके द्वारा किये गये कार्यों / शहादत का स्मरण करें।

2. सभा:-

यह कार्यक्रम छोटे या बड़े स्तर में किया जा सकता है। सामने मंच बनाये मंच में गुरुबालकदासजी का चित्र रखें। उसके सामने लोगों के बैठने का स्थान हो। मंच से उनके शहादत के विषय में उपस्थित लोगों को बताया जाये।

3. रैली:-

रैली दो स्तर पर आयोजित किया जा सकता है।

1. **स्थानीय स्तर-**इसमें मोहल्ला / नगर या गांव स्तर पर रैली आयोजित किया जायेगा।
2. **केन्द्रिय स्तर-** इसमें 1. कई गांवों के समूह 2. ब्लाक स्तर 3. जिला स्तर पर 4. संभागीय स्तर पर या 5. राज्य स्तर पर रैली का आयोजन किया जा सकता है।

3. मेला

स्थान की उपलब्धता वाले स्थानों में शहादत मेला का आयोजन किया जा सकता है। इसके लिए अस्थाई शहीद स्मारक बनाया जा सकता है। इसमें उनके शहादत से संबंधित गीत, नाटक, भाषण चित्र-प्रदर्शनी प्रतियोगिता आदि का आयोजन किया जा सकता है।

4. संगोष्ठी:-

इस अवसर पर संगोष्ठी का आयोजन भी किया जा सकता है। जिसमें उनके शहादत से संबंधित विषय पर विचार-चर्चा किया जाये।

5. नारे

कार्यक्रम में इस प्रकार तख्तियां बनवाया जा सकता है और उसे नारे के रुप में भी उपयोग में लाया जा सकता है

1. अमर शहीद गुरुबालकदास की - जय, 2. गुरुबालकदास तेरा महान् शहादत - नहीं भूलेगा शोषित इंसान, 3. हमें चाहिए हक व समानता - इससे कम न इससे ज्यादा, 4. हमें चाहिए - आजादी, 5. जातिवाद से - आजादी, 6. सामंतशाही से - आजादी, 7. पूंजीवाद से - आजादी।

शहादत दिवस पर क्या करें व क्या न करें?

गुरुबालकदास जी का शहादत दिवस एक बहुंत ही महत्वपूर्ण दिवस है इसलिए इस दिन हमें क्या करना चाहिए व क्या नहीं करना चाहिये इस पर हम निम्न सुझाव दे रहे हैं। यह प्रचार-प्रसार व उसके महत्व को बढ़ाने के लिए है यह गतिविधि कोई नियम-कानून नहीं है। इसका पालन करने की आप स्वविवेक का इस्तेमाल करें।

क्या करें–

1. गुरुबालकदास जी का चित्र कार्यक्रम के अनुसार विभिन्न साईज में उपलब्ध रखें, चित्र की अनुपस्थिति में जैतखाम निशाना या ऐसे ही उनका स्मरण किया जा सकता है।
2. रैली के लिए रैली के स्तर के अनुसार पैदल, मोटर सायकल या चार पहिया गाड़ियों का उपयोग किया जा सकता है। यह कतारबद्ध व अनुशासित होना आवश्यक है। रैली के सामने गुरुबालकदास जी का चित्र रखें।
3. मेला के लिए अस्थाई शहीद स्मारक के मॉडल का निर्माण करे जिसे कार्यक्रम के बाद संबंधित स्थल से हटाया जा सके और आगे किसी प्रकार का विवाद न हो, अपने नियंत्रण वाले स्थान में स्थाई स्मारक का निर्माण भविष्य के गतिविधियों/आवश्यकताओं को देखते हुए करें।
4. कार्यक्रम में बिना किसी जाति, धर्म, लिंग, भाषा, क्षेत्र का भेद किये सभी ऐसे लोगों को आमंत्रित करें जो समानता, भाईचारा में विश्वास रखते हों।
5. आज के दिन 17 मार्च को सुबह 8.30 बजे अपने सुविधानुसार स्थानों में 2 मिनट का मौन रखकर शहादत का स्मरण करें व संकल्प लें कि हम समानता, भाईचारा व पीड़ित मानवता के लिए संघर्ष करते रहेंगे।

क्या न करें–

1. गुरुबालकदास जी के चित्र या जैतखाम-निशाना का पूजा न करें।
2. नारियल फोड़कर प्रसाद न खायें न दूसरों को प्रसाद दें।
3. अग्नि में होम न दें। (किसी भी प्रकार का अनाज या फल को आग में न जलायें)
4. गुरुबालकदासजी को भगवान न माने और भगवान समझकर उससे अपने किसी पीड़ा को हरने या चाहत पूरा होने पर नारियल चढ़ाने आदि की तरह का प्रस्ताव न रखें।
5. अगरबत्ती का उपयोग न करें।
6. इस दिन अपना दिनचर्या सादगी के साथ पूरा करें।
7. आज के दिन व्यक्तिगत या सार्वजनिक रुप से समारोह पूर्वक उत्सव न मनायें।
8. कोई भी ऐसा कृत्य न करें जो आधुनिक सतनाम विचार-धारा के प्रतिकुल (उलटा) हो।
9. व्यक्तिगत या सार्वजनिक कार्यक्रम में किसी को बुलाकर उसे गुरुमानकर उसकी पैर पूजाई न करें।
10. पवित्र जैतखाम-निशाना या पीड़ित मानवता के लिए संघर्ष न करने वाले महापुरुषों के प्रतीकों को छोड़कर किसी भी अन्य प्रतीक (मूर्ति, चित्र आदि) के सामने सिर न झुकाएं।

(उपरोक्त विवरण देने का उद्देश्य यही है कि कार्यक्रम में एकरुपता बनी रहे, कार्यक्रम अपने उद्देश्य से न भटके या दिशाहीन न हों।"

कुमार (रामकुमार लहरे)

गुरुबालकदास के महान शहादत को सदियों तक छिपा/दबाकर मिटा दिया गया था। जिसे महान खोजकर्ता साहेब लखन सुबोध व साहेब भुवन रात्रे जी के नेतृत्व में हुए शोध (खोज) से सन् 2000ई. में गुरुबालकदास जी के महान शहादत गाथा को क्रांतिकारी जनसंगठन जी.एस.एस.ने प्रचारित किया, जिससे प्रेरणा लेकर यह 'स्मारिका' गुरुबालकदास शहादत दिवस प्रकाशित किया गया।

– सतनाम पुनर्जागरण मिशन, बिलासपुर (छ.ग.)

एकता के संदेश (आवव ग सब जागव ग)



आवव ग सब जागव ग
सतनाम कमेटी बनावव ग
इंन छरियावव येति–ओति
एकता के सुंत म बंधावव ग..... आवव

1. जब-जब गुरु रावटी करीन
ये छत्तीसगढ़ के मांटी म
भेद -भाव इंसा मंरीन
काँटा अस गड़गे छाती मा
गुरुबालकदास के हत्या करीन
निंसी अधिंयारी राती म
अब देखो चुकौ इंन भईया
उतरे हे दमनकारी उत्पाती
झण्डा के डण्डा सम्हालौ संगी
धर्म के लाज बचावव ग..... आवव

2. चुगरी के चाउंर चाबे हे संगी
भावना के भात ल खाये हे
चिंकनी चुपड़ी के चटंनी चांटे
कलहा पाँव जमांवत हे
पाप के पानी पिये हे संगी
गली-गली बऊरात हे
करिया अंग्रेज मुंड़ चढ़के नांचे
खोखला ढोल बजावत हे
कोंनो गड़ैं इंन बिखहर काँटा
अब रद्दा चतवारौ गा.....आवव

3. पुरखा पाहर ले जीत के झंडा
लहर-लहर लहरात हे
भेद-भाव जहर के खातिर
कतको जान गंवायें हे
सौ प्रतिक के ऐके झण्डा
अब रद्दा नंवा बनावव ग
सतनाम धर्म के धर्म ग्रंथ ल
बच्चा-बच्चा ल पढ़ावव ग
भरम जाल ल छोड़व संगी
धरम ल सफल बनावव ग....आवव

घासीराम रात्रे
ग्राम-किरारी गोढ़ी
(भाठापारा)
पोस्ट-बिटकुली, तह.व थाना-बिल्हा
जिला-बिलासपुर (छ.ग)

औराबांधा का सच



17 मार्च 1860 में षड्यंत्र कर गुरुबालकदास जी की हत्या मुंगेली जिले के निकट औराबांधा नामक गांव में सामंतों ने समाज के कुछ दलाल लोगों को साथ लेकर कर दी। यह तो सभी जानते हैं, लेकिन हत्या के पीछे की सच से सभी अनजान है, और जो लोग जानते थे/हैं, वे लोग भी चुप्पी साधे बैठे हैं। बिना किसी मकसद से कोई किसी की हत्या क्यों करेगा, जब कोई किसी के आंखों का किरकिरी बन जाता है तो फिर वे उसे मिटाने का निर्णय ले लेते हैं, गुरु घासीदास ने 1820 से सतनाम आंदोलन की शुरुआत की थी। 1850 में उनके नहीं रहने के कारण गुरुबालकदास सतनाम आंदोलन के मुखिया बने और सतनाम आंदोलन को दिन दुनी-रात चौगुनी गति से बढ़ाने लगे। सतनाम आंदोलन की बागडोर वे संभाल लिये उस स्थिति में उनकी पहचान एक न्यायप्रिय मुखिया की हो गयी थी और यह सामंतों को सहन नहीं हो पा रहा था। यही वह समय था जब अंग्रेजी हुकूमत मालिक मकबूजा कानून लागू करना चाह रहे थे, जो जिस भूमि पर जीविकोपार्जन कर रहा था उसे उस भूमि का मालिकाना हक मिलने का कानून बन चुका था। इससे लोग पर्याप्त संख्या में भूमि के मालिक बन गये होते और सामंती नहीं चाहते थे कि कोई सतनामी उनके सामने मालिक बन उनसे बराबरी कर सके। सामंतियों ने साम-दाम-दंड भेद नीति से बाहर से गुंडे-पंडे बुलवाकर उन्हें भूमिं का मालिक बनाने का सपना दिखाकर और कुछ समाज के दलालों से साठ-गांठ करके गुरु बालकदास जी की हत्या को अंजाम दिया, उनके (सामंती) विचार से सतनामी समाज की बड़े जनसंख्या को देखकर उन लोगों ने आम लोगों से लड़ने के बदले मुख्य सेनापति को ही मारना ज्यादा उचित समझा।

उदाहरण- जिस तरह किसी विशाल वृक्ष को काटने-छांटने में बहुत समय लगता है लेकिन अगर थोड़ी मेहनत करके उस वृक्ष की जड़ को काट दिया जाय तो वह पेड़ अपने आप मर जायेगा।

आज उसका प्रमाण सामने है कि गुरुबालकदास की हत्या के बाद सतनाम आंदोलन का दमन हो गया जो आज तक निरंतर चल रहा है और आंदोलन के बदले अंधविश्वास ने अपने पैर पसार लिया है और इसी अंधविश्वास को सामने रखकर इतिहास को मिटाने का प्रयास किया गया और आज इसके परिणाम हम देखते-सुनते हैं कि समाज में इस पर क्या भ्रांतियां फैली हुई है-

जनश्रुति - लोग कहते हैं ''हमर गुरु ह श्राप दै हावय के सतनामी समाज म कभु एकता नई होवय ऐ मन कभू राज नई करय काबर ऐमन मोला धोखा दे के मरवाए हे।

सच क्या है?- यह एक साजिश है जिससे लोग भावनात्मक रुप से इसे गुरु का श्राप समझ सच्चाई के तह तक जाने का प्रयास ही न करें।

जनश्रुति - आज भी लोग कहते मानते हैं-''जेन मेर गुरु के लहू गिरे हे ओकर नजर के जात ले ओमेर के भूईयां म घास नई जामय, ये गुरु के दिये श्राप हावय''

सच क्या है?- यह गलत धारणा है, जिस स्थान पर गुरुबालकदास की हत्या हुई है वहां और उसके आसपास सैकड़ों हेक्टेयर भूमि पर अनेक प्रकार के फसल लहलहा रहे हैं, उन्नत तरीके से कृषि कार्य हो रहा है, जिसके आमदनी से उन पर काबिज सामंती लोग लाखों रुपये के वारे-न्यारे कर रहे हैं।

इन्ही सब हालातों को देखते हुए उस औराबांधा की सच जानने का प्रयास 'स्मारिका' के माध्यम से लोगों तक पहुंचाना जरुरी हो गया और इस सच्चाई को हम निम्नलिखित बिन्दुओं पर क्रम से बताना जरुरी समझते हैं जो नीचे दर्शाया जा रहा है।

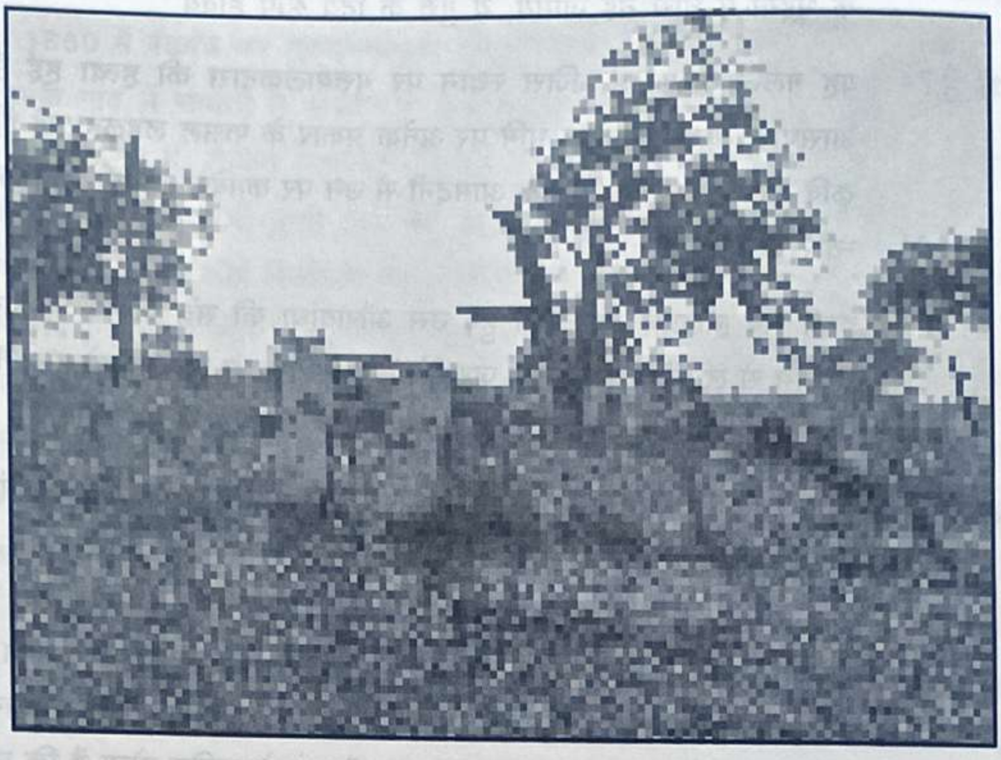
1. स्थल का इतिहास- औराबांधा का उक्त स्थल और उसके आसपास का क्षेत्र (जहां गुरुबालकदास की हत्या हुई) पहले वह सतनामियों के मालिकाना हक में थे, जिसे प्राप्त करने के लिए और समाज की बढ़ती हुई लोकप्रियता को खत्म करने समाज के लोगों को नेतृत्वहीन करने के लिए ही गुरुबालकदास की हत्या का षडयंत्र रचा गया जो दहशत आज भी कायम है। एक आम इंसान उस जगह पर जाने से कतराता है और इसका कुछ जिम्मेदार सरकार भी है जो वहां आए दिन धारा 144 लगाकर रखता है। इससे साबित होता है कि उक्त स्थल कितना ऐतिहासिक है समाज के लिए।

2. स्थल का महत्व- किसी भी समाज समुदाय के लिए समाज के महापुरुषों का जन्मस्थल-निर्वाण स्थल का अपना अलग ही महत्व होता है, जो समाज में नई जन चेतना पैदा करती है, जहाँ पर गुरुबालकदास शहादत को प्राप्त हुए वह स्थान समाज के लिए प्रेरणा का स्रोत बन सकता है, जो नई पीढ़ी को समाज के प्रति बलिदान हो जाने का जज्बा पैदा करने वाली बन जाता है।

उदाहरण - सिक्ख समाज के महापुरुष गुरु तेगबहादुर की वीरता स्थल ''शीशगंज'' को सिक्ख समाज अपना आन-बान और शान का प्रतीक मानता है और उसे पीढ़ी-दर-पीढ़ी अपना ऐतिहासिक धरोहर मानता है, लेकिन बड़े शर्म की बात है कि छ.ग. में सतनामी बाहुल्य समाज अपने गुरु के निर्वाण स्थल पर अपन शीश नहीं झुका सकता है।

3. स्थल की पहचान मिटाने का षडयंत्र- हजारों वर्षों से भारत में लोक समाज का इतिहास मिटाने का षडयंत्र चला आ रहा है, जो प्रभु वर्ग के लोगों के द्वारा किया जाता रहा है जो आज भी चल रहा है। ये सामंती नहीं चाहते कि लोक समाज अपनी महापुरुषों के ऐतिहासिक महत्व को

जानें इसलिए ये इन्हें इतिहास से मिटाने का प्रयास करते रहते हैं। औराबांधा में भी गुरुबालकदास की शहादत भूमि को ये सामंती अपने कब्जे में रखे हुए हैं और उक्त स्थल पर ''ठाकुरदेव'' की स्थापना कर ''चोरी और सीना जोरी'' वाली कहावत को चरितार्थ कर रहे हैं।



नोट– क्या कारण था कि गुरुबालकदास की हत्या के बाद उनके मृत देह को भंडार में नहीं दफनाया गया जबकि वे गुरुघासीदास के उत्तराधिकारी थे।

षड्यंत्र क्यों किया गया– पूरे क्षेत्र में सतनाम आंदोलन का बोलबाला था जिसके कारण लोग जातपात की बेड़ियों को तोड़कर सतनाम आंदोलन में हिस्सा लेकर सतनामी बन रहे थे जो जाति नहीं नीति थी और अपनी एकता के बल पर भूमि के मालिक बन रहे थे। सामंती इस बात को सहन नहीं कर पा रहे थे, उनको इस बात का एहसास हो गया था कि बालकदास के रहते वे सतनाम आंदोलन का खात्मा नहीं कर सकते थे और गुरुबालकदास अपने वर्ग के हितों की रक्षा के लिए एक मजबूत दीवार थे। इसलिए इस तरह का षड्यंत्र कर वे आज हजारों एकड़ भूमि के मालिक बन बैठे हैं।

4. समाज पर क्या असर हुआ– नेतृत्वकर्ता के नहीं होने पर बड़ी से बड़ी सेना तितर–बितर हो जाता है, आज समाज का भी यही हाल है। लाखों की संख्या होने के बाद भी सतनामी आज छ.ग. में केवल गुलाम चाकर बनकर रह गया है और समाज अपने मुखिया के हश्र को देखकर सहम गया है, यही कारण है कि औराबांधा आज उपेक्षित पड़ा हुआ है, उस पर दूसरों का अधिकार है। जिस तरह लोग गिरौद में लाखों की संख्या में जाते हैं भले ही अंधभक्त बनकर

जाते हैं कि गुरुघासीदास हमारे कष्टों को दूर देंगे, यही विचार लेकर जाते हैं, अगर औराबांधा में भी समाज अपने गुरु की वीरता को याद करने जाता तो हमारा इतिहास कभी न मिट पाता, सरकार, गुरु, महंत आदि लोग गिरौद में कुतुबमीनार से ऊंचा जैतखाम बनवाकर समाज को वोट बैंक ही बनाने का काम कर रहे हैं। औराबांधा की तरफ इनका ध्यान क्यों नहीं जाता? इन्हीं सब बातों को देखकर लगता है कि ये लोग नहीं चाहते कि समाज अपनी दिशा बदले, केवल भाव-भक्ति में ना लगे रहे बल्कि अपने गुरुबालकदास की शहादत को याद करें, तो निश्चित ही समाज में एक नई परिवर्तन का युग आयेगा।

नोट - कुछ लोग तो गुरुबालकदास को भी गुरुघासीदास की तरह चमत्कारी बनाने में लगे हैं और उनके नाम के आगे ''बाबा बालकदास'' लिख रहे हैं। हम ऐसे लोगों से पूछना चाहते हैं कि ये लोग समाज को गुरुबालकदास की शहादात के बारे में क्यों नहीं बताना चाहते, औराबांधा के सच का सामना क्यों नहीं करते? ये लोग गुरुबालकदास की शहादत स्मारक औराबांधा में बन जाने के बाद वहां भी पंडागिरी करने पहुंच जायेंगे। अब समाज तय करे कि वे गुरुबालकदास को किस रुप में स्वीकार करेंगे-चमत्कारी या क्रांतिकारी।

– हरीश पांडल

गुरुबालकदास शौर्य गीत

हमर आन-बान-शान हे, गुरूबालकदास महान हे...
गुरूबालकदास महान हे....

1. गरीब बर दाता रहिच
स्वाभिमानी गुरुराजा रहिच
हम सबके वो जान हे
गुरुबालकदास महान हे...

2. खोरवा के लाठी रहिच
अंधरा के आँखी रहिच
गूंगा के वो तान हे
गुरुबालकदास महान हे...

3. प्यासा बर पानी रहिच
अज्ञानी बर ज्ञानी रहिच
ओला देख सामंत हैरान हे
गुरुबालकदास महान हे...

4. शोषित,पीड़ित बर लड़े रहिच
सतनाम धरम बर अड़े रहिच
मालिक मकबुजा कानून के ओला ज्ञान हे
गुरुबालकदास महान हे...
हमर आन-बान-शान हे
गुरुबालकदास महान हे...

कविता

सतनामी के लहू



होबे सतनामी के लहू त पाल खींच ललकार।
गुरुबालकदास के वीर शहादत अब झन जाय रे बेकार।
पूरखा के जंख लगे तलवार टें के रख तैयार।

1. गुरुबालकदास के हत्या का तोला जियानथे
औराबांधा के घटना सुन आँखी ले लहू चुचवाथे।
गुरु घासीदास के विचार हत्या कलम के मार जियानथे।
ब्राम्हणवाद म फंसके सतनामी उखरे तलवा चांटथे
जियानथे त इतिहास जान झन थोथना उतार।

2. गुरुबालकदास के गौरव गाथा माटी के कण-कण बोले।
सतनामी बघवा बने हवस फेर खून कइसे नई खऊले।
बालकदास के महान बलिदान भाजी-भांटा कस तऊले
बघवा साहस, शक्ति के रुप, बेरी के घेंच पऊले।
गदहा अस कि बघवा, बघवा होबे त दहाड़मार।

3. नौंछेटहा लईका (सतनामी) जोश नहीं त उहू का जवानी हे।
तोर नस-नस म लहू नहीं का गुलामी के पानी हे।
पुरखा के इतिहास पलट का अइसनहे सतनामी हे।
सम्मान से मुड़ कटे झुके नहीं अइसनहा सतनामी हे।
तोर लहू के एक-एक बूंद के किरिया जाग, उठ हुंकार भर।

4. लाखों हजारों भीड़ म सतनामी अकेल्ला बाघ कस दिख।
बालकदास ले सिख सतनामी झन मांगबे भीख।
गठरी कस गठिया ले दुःख म घलो झन चीख।
जे रोटी म हक हे तोर छिन के इतिहास लिख।
लहू के नदिया म हाथ धो हासिल कर अधिकार।

5. बलिदानी बालकदास गुरु ल एक-एक बूंद खून दे।
आँसू झन बहा सतनामी वीरता के पहिचान दे
सतनाम आंदोलन म हाथ बंटा समाज ल स्वाभिमान दे
सम्मान से मरे बर घलो आगू सीना तान दे
सतनाम धरम बर लईका, सियान हर हाथ हथियार।

चिन्तामणी देशलहरे
ग्राम-डोमनपुर, पो.-दशरंगपुर
तह.व जिला-मुँगेली (छ.ग.)495330

गुरुबालकदास का संक्षिप्त जीवन परिचय



1. गुरुबालकदास का जन्म सन् 18 अगस्त 1805 में हुआ और उनकी मृत्यु 17 मार्च 1860 को औराबांधा-मुंगेली में हुए जातिवादी-सामंती हमले के परिणाम स्वरुप बेमेतरा के कोसा नामक गांव में हुआ तथा उनकी काठी-माटी (कफन-दफन) ढारा नवलपुर बेमेतरा में हुआ। आज लोग उस महान् क्रांतिकारी राजा गुरुबालकदास जिन्होंने लोक समाज के रोटी और सम्मान की लड़ाई में समाज के लिए बलिदान हो गये ऐसे महान शहीद व्यक्ति के शहादत को लोग आज भूल गये हैं। सतनामी समाज के लोग होली, दशहरा, दिवाली को याद करते हैं, और मुबारकबाद देने के लिए मोबाईल में वाट्सऐप, एसएमएस और कार्ड छपवा कर देते हैं। जिस त्यौहार से सतनामी समाज को कोई लेना देना तक नहीं है। आखिर उस त्यौहार को मनाने से हम सतनाम धर्मियों का क्या भला होगा, कुछ भी नहीं, जिस गुरुबालकदास ने हमारे लिए अपनी जान की कुर्बानी दे दी वैसे महान व्यक्ति को समाज के लोगों को याद करना चाहिए, तथा जगह-जगह शहादत दिवस मनाना चाहिए और नहीं तो उसे याद करने के लिए उस जगह जहां उनका समाधि भूमि बना है, ढारा नवलपुर में वहां पर हर साल 17 मार्च को उसके शहादत को स्मरण-नमन् के लिए जाना चाहिए।

2. आखिर गुरुबालकदासजी का हत्या क्यों हुआ था? उसको मारने के पीछे किसका हाथ था? उसको मारे क्यों? मरने के बाद उसके शव को ढारा-नवलपुर में क्यों दफन किया, वह तो भण्डार का राजा था। उसका काठी-माटी भण्डार में होना था। आखिर क्यों भण्डार में नहीं हुआ? आज के कथित गुरु वंशज बने हैं वो, अपने आपको वो गुरु का वंश कहते हैं, गुरु परिवार कहते हैं, लेकिन उनके रहते उसके शव को भण्डार में क्यों नहीं दफनाया गया। ये बहुत बड़ी बात है, समाज को इस विषय में सोचना चाहिये। यह बात हमें सोचने को मजबूर कर रहा है। आखिर ये गुरु परिवार हैं भी या नकली गुरु परिवार बनकर बैठे हैं।

गुरु बालकदास को मारने के पीछे का सच क्या है? उसको मारा क्यों गया? क्योंकि गुरुबालकदास, गुरुघासीदास, गुरुअमरदास जी ने मिलकर 40 साल सतनाम धर्म आंदोलन चलाये। जो आंदोलन जातिविहीन समाज बनाना चाहता था। जात-पात के खाई को तोड़-फोड़ कर एक नया सतनाम धर्म का अनुयायी बनाना, जिसमें लाखों तेली, कुर्मी, राऊत, यादव, अहीर भाई लोग जात-पात को तोड़कर सतनाम धर्म को अपनाने लगे और सतनामी बनते चले गये। यही बात दुश्मन-बैरी के देह मा खटक गे, कहे लागिस कि यदि इस सतनाम आंदोलन को नहीं रोका गया तो आने वाले 10-12 साल में पूरा भारत सतनाम मय हो जायेगा, सब सतनामी बन जायेंगे तो हमारा राज सत्ता पूरा का पूरा छीन जायेगा, इसलिए इसको रोको, यदि नहीं रोका तो हम कहीं के नहीं रहेंगे। तो इसके लिए क्या करना पड़ेगा। इनके मुखिया को मारना पड़ेगा और मारकर दिशा भी बदलना पड़ेगा

और वैसे लोगों को मुखिया बनाना पड़ेगा जो हमारे इशारे पर काम करें। यदि किसी राज्य का राजा मर गया तो प्रजा को काबू करने में कितना समय लगता है।

3. यही कारण था साथियों गुरुबालकदास को औराबांधा में धोखे से बुलाया गया, बालकदास जी उनके षड्यंत्र को नहीं समझ पाये और औराबांधा में रात को अंधेर में मारेंगे करके दावत पर बुलाया गया और अंधेरे में उस पर चुपचाप वार किया गया क्योंकि दिन के उजाले में गुरुबालकदास को नहीं मार सकते थे ऐसा गुरुबालकदास ने जनसेना तैयार किया था, इसलिए रात के अंधेरे में वार किया गया। गुरुबालकदास को मारने के लिए नागपुर, कन्नौज के बड़े बड़े लठैत गुण्डे और पिंडारी को बुलाया था। सामंती ताकतों ने उन्हें ये कहकर बुलाया था कि तुम्हारे पास वहाँ एक डिसमिल जमीन नहीं है। यदि यहाँ छत्तीसगढ़ में आकर काम को अंजाम दिया तो यहां पर हम आप लोगों को हजारों-हजार एकड़ जमीन के मालिक बना देंगे और वो लोग यहां आए और काम को अंजाम दिये, गुरुबालकदास को मारे उसके बाद उनको हजारों एकड़ जमीन के मालिक बनाये। ये खेल 1860 से अब तक आज भी चल रहा है, लेकिन गोपनीय रुप से। आज आप देख लीजिए सतनामियों के जमीन को किस तरह धड़ल्ले से बिकवा रहा है। हमारे ऊपर बैठे आकाओं के इशारे पर गांव-गांव में बैठे दलालों के द्वारा ये खेल चल रहा है और हमें यहां से कमाने-खाने के लिए बाहर राज्य पलायन करा रहे हैं। ताकि ये लोग पुनः उस सतनाम आंदोलन को ना जाने, उस जन, जंगल, जमीन, रोटी, सम्मान की लड़ाई को।

4. दुश्मन जानता है कि सतनाम आंदोलन में क्या-क्या हुआ था। हमारे ही लोग उस बात को नहीं जानते लेकिन जाने भी तो कैसे? क्योंकि उस सतनाम आंदोलन का पूरा का पूरा दमन कर दिया गया है और हमारे सतनाम धर्मियों को जातपात के खाई में ढकेले हुए हैं। ईश्वरवाद, भाग्यवाद, स्वर्गवाद-नर्कवाद के चक्कर में पूरा फंसाकर ब्राम्हणवाद का चोला पहिरा दिया गया है। इसलिए लोग सतनाम को जप भज रहे हैं और कुछ भी नहीं। हमारे बड़े-बड़े कलाकार, चौकहार, लेखक, कवि लोग रास्ता भटकाने में बहुत माहिर हैं। एक हमारे बहुत बड़े कलाकार वकील भी हैं, नाम नहीं लूंगा जब GSS के लोग उस कलाकार को गीत गाने बोला गया कि गुरुबालकदास का ऐसा-ऐसा गाना बनाओं तो उन्होंने पहला कैसेट का गाना सही बनाया 'औराबांधा मा लड़िन' करके लेकिन जब दूसरा कैसेट निकाला तो उस वकील ने अपने मन से गाने में क्या जोड़ा 'गुरुबालकदास के गले में जब तलवार मारा तो दूध का धार बहने लगा और उस जगह पर गेंहू, धान आज भी नहीं उगता हैं। अब लो बताव किसी इंसान के शरीर को काटने से दूध कैसे बहेगा और मरने से धान, गेंहू नहीं उगने का क्या संबंध है। उस जगह पर जाकर देखने में लबालब धान, गेहूं उग रहा है। यही लोग सबसे बड़के दमनकारी हैं जो सतनाम धर्म के आंदोलन को दबाया गया। इन जैसे वकीलों को कैसे डिग्री मिल जाता है, टोनही केश को कैसे साल्व करता होगा समझ से परे हैं।

5. अब मैं आता हूं सबसे बड़े षड्यंत्र गुरुबालकदास के शव-दफन को लेकर हुआ, जब गुरुबालकदास भण्डार का राजा था तो उसका कफन-दफन ढारा नवलपुर क्यों? नवलपुर का राजा भुजबल महंत, जो गुरुबालकदास का बड़े साला था (जिन्होंने 1883 में डोला निकाला था) जो निरा माता का भाई था, उन्होंने उसके शव को कोसा से अपने गांव नवलपुर में लाकर दफनाया, यह विचारणीय है कि गुरुबालकदास गुरु परिवार है तो भण्डार में

क्यों कफन-दफन नहीं हुआ, उसका डेढ़साला क्यों किया, क्योंकि गुरुघासीदास, गुरुबालकदास, अमरदास के जितने भी सम्पत्ति थे उनको कब्जा जमाने के लिए उसके मृत शरीर को भण्डार नहीं लाये, गुरुबालकदास का एक लड़का था साहेबदास जो लंबरदार था। बालकदास के मृत्यु के बाद सारे सम्पत्ति का मालिक साहेबदास बनता। मृत्यु उपरांत साहेबदास को दर-दर की ठोकरे खाना पड़ा। बाद में उसे भी मार दिया, ये कहकर कि साहेबदास पटऊहां से गिर के मरगे। अरे पटऊंहा से गिरता तो हाथ, पैर, कोहनी में चोट लगता, लेकिन बिना कोई चोट के सीधा मर गया। इसके पीछे क्या कारण है, आज भी उस सम्पत्ति और बंटवारा को लेकर लड़ाई-झगड़े होते रहता है।

जैसे– रावण को मारने वाला राम नहीं था, उसका खुद का भाई विभीषण था। उसी प्रकार गुरुबालकदास को मारने वाले आज के बने विभीषण लोग हैं। जय सत-जय तत GSS जिंदाबाद!

किशोर सोनवानी
ग्राम- सलौनी पोस्ट-सिवनी

गुरुबालकदास का संदेश

शोषितों-पीड़ितों के आन-बान वेश हूँ

1. जन-जन में स्वाभिमान जगाता-गुरुबालकदास का संदेश हूँ
इतिहास के पन्नों का सच बतलाने आया हूँ
अपने अतीत का सच्चा गौरव मैं लौटाने आया हूँ
समता मूलक हो समाज संघर्षों का परिवेश हूँ
जन-जन में स्वाभिमान जगाता गुरुबालकदास का संदेश हूँ

2. पूर्वजों की उज्जवल गाथा का मैं सच सुनाता हूँ
मिटाया जो इतिहास पन्नों से उसे मैं आज दिखाता हूँ
अपनों के हर दुख-सुख में साथी में करता प्रवेश हूँ
जन-जन में में स्वाभिमान जगाता, गुरुबालकदास का संदेश हूँ।

3. प्रतिभावान, प्रबुद्ध जनों विद्वानों संग चलता हूँ।
विचारक्रांति की बन मशाल मैं निरंतर जलता हूँ
रोटी और सम्मान की मांग पर मैं विशेष हूँ
जन-जन में स्वाभिमान जगाता गुरुबालकदास का संदेश हूँ।

4. मैंने प्रबल प्रहार किया, एकता की कटार से
अन्यायी पर वार किया समतामूलक विचार से
मानवाधिकार की बात करता' सतनाम धर्म प्रवेश हूँ
जन-जन में विश्वास जगाता गुरुबालकदास का संदेश हूं
शोषितों, पीड़ितों की आन-बान का वेश हूँ.....गुरु......

अमन भरी शाम चाहिए.....



आज हर हाथ को काम चाहिए,
मेहनत का वाजिब दाम चाहिए।

तंगी हालात से सदियों से सड़ गए
अब मेरे बच्चों को भी आराम चाहिए।

तन के जख्म अब चीखने लगे हैं,
इंसानियत का हक तमाम चाहिए।

जी चुरा कर कभी न भागा हमने,
हमारे शोषकों पर लगाम चाहिए।

बनाया जो हमने मंदिर -मस्जिद,
अपने लिए तो एक अच्छा इंसान चाहिए।

गरीब शोषित बनना हुआ बहुत,
अब तो अच्छा सा नाम चाहिए।

शायर गाते रहे हैं हजारों नज्म,
हमें पढ़ने -कढ़ने वाला कलाम चाहिए।

जन्नत से दरमियाँ कोषों हैं मगर,
बेखबर अमन भरी शाम चाहिए।

मनोज लहरे ''बेखबर''
ग्राम-डोडकी
पोस्ट व तह.-बिल्हा
जिला-बिलासपुर (छ.ग.) पिन- 495224

गुरुबालकदास शहादत दिवस ज्ञान प्रतियोगिता संबंधित

नियम व शर्ते

1. नीचे दिये गये प्रश्न के वैकल्पिक प्रश्नोत्तरी में से सही उत्तर पर ✔ निशान लगाने वाले व्यक्ति को विजेता / पास / उत्तीर्ण माना जायेगा।
2. एक से अधिक व्यक्ति के उत्तीर्ण होने पर पुरस्कार के लिए विजेता का चुनाव विधिमान्य पारदर्शी (आनस्पाट) ड्रा पद्धति से किया जाएगा।
3. उत्तर स्लिप के चिन्हांकित स्थान से काटकर इसे एक छोटे सामान्य लिफाफा में डालकर अच्छी तरह से बंदकर / चिपकाकर लिफाफे के ऊपर प्रेषक में अपना नाम (प्रतियोगी का) पता, मोबाइल नं. लिखकर एवं प्राप्तकर्ता में शहादत दिवस प्रतियोगिता, हरीश पांडल, 'पांडल निवास' साईबाबा अस्पताल के सामने, रिंग रोड नं.02, बिलासपुर छ.ग. पिन. 495001 लिखें एवं लिफाफे में और कुछ न लिखें। इस लिफाफा को निम्न प्रकार से जमा / भेज सकते हैं।
   - (i) लिफाफा में पांच रूपये का डाक टिकट लगाकर प्रतियोगिता परिणाम तिथि के करीब एक सप्ताह पूर्व पोस्ट करें।
   - (ii) प्रतियोगिता परिणाम व पुरस्कार वितरण के दिन तारीख में आकर समय पूर्व स्वयं जमा करें।
   - (iii) परिणाम स्थल में ही विजेताओं को नगद पुरस्कार व गुरुबालकदास जी का ओरिजनल चित्र फ्रेम किया हुआ दिया जायेगा। यदि वहां विजेता उपस्थित न हो तो विजेता से संपर्क कर उनकी सुविधानुसार पुरस्कार प्रदान किया जावेगा।
4. पुरस्कार विजेता को पुरस्कार प्राप्त करते समय पुस्तिका के उस प्रति को दिखाना होगा जिससे उन्होंने उत्तर स्लिप काटकर भेजा है।
5. प्रस्तावित आगामी कार्यक्रम 'स्वाभिमान दिवस' दिनांक 28 अप्रैल 2018 को बिलासपुर, मुंगेली या नवलपुर (बेमेतरा) में पुरस्कार प्रदान किया जावेगा। अप्रत्याशित कारणों से निर्धारित तिथि व समय में परिवर्तन बिना किसी पूर्व सूचना के किया जा सकता है।
7. अनचाहे किसी भी विवाद पर गुरुबालकदास शहादत दिवस आयोजन समिति बिलासपुर छ.ग. का निर्णय अंतिम रूप से मान्य होगा।

------------✂-- यहाँ से काटिए --✂------------

'स्मारिका' गुरुबालकदास शहादत दिवस, मार्च 2018, 'स्मारिका' गुरुबालकदास शहादत दिवस, मार्च 2018'स्मारिका' गुरुबालकदास शहादत दिवस, मार्च 2018
'स्मारिका' गुरुबालकदास शहादत दिवस, मार्च 2018, 'स्मारिका' गुरुबालकदास शहादत दिवस, मार्च 2018'स्मारिका' गुरुबालकदास शहादत दिवस, मार्च 2018
'स्मारिका' गुरुबालकदास शहादत दिवस, मार्च 2018, 'स्मारिका' गुरुबालकदास शहादत दिवस, मार्च 2018'स्मारिका' गुरुबालकदास शहादत दिवस, मार्च 2018
'स्मारिका' गुरुबालकदास शहादत दिवस, मार्च 2018, 'स्मारिका' गुरुबालकदास शहादत दिवस, मार्च 2018'स्मारिका' गुरुबालकदास शहादत दिवस, मार्च 2018
'स्मारिका' गुरुबालकदास शहादत दिवस, मार्च 2018, 'स्मारिका' गुरुबालकदास शहादत दिवस, मार्च 2018'स्मारिका' गुरुबालकदास शहादत दिवस, मार्च 2018
'स्मारिका' गुरुबालकदास शहादत दिवस, मार्च 2018, 'स्मारिका' गुरुबालकदास शहादत दिवस, मार्च 2018'स्मारिका' गुरुबालकदास शहादत दिवस, मार्च 2018
'स्मारिका' गुरुबालकदास शहादत दिवस, मार्च 2018, 'स्मारिका' गुरुबालकदास शहादत दिवस, मार्च 2018'स्मारिका' गुरुबालकदास शहादत दिवस, मार्च 2018
'स्मारिका' गुरुबालकदास शहादत दिवस, मार्च 2018, 'स्मारिका' गुरुबालकदास शहादत दिवस, मार्च 2018'स्मारिका' गुरुबालकदास शहादत दिवस, मार्च 2018
'स्मारिका' गुरुबालकदास शहादत दिवस, मार्च 2018, 'स्मारिका' गुरुबालकदास शहादत दिवस, मार्च 2018'स्मारिका' गुरुबालकदास शहादत दिवस, मार्च 2018
'स्मारिका' गुरुबालकदास शहादत दिवस, मार्च 2018, 'स्मारिका' गुरुबालकदास शहादत दिवस, मार्च 2018'स्मारिका' गुरुबालकदास शहादत दिवस, मार्च 2018
'स्मारिका' गुरुबालकदास शहादत दिवस, मार्च 2018, 'स्मारिका' गुरुबालकदास शहादत दिवस, मार्च 2018'स्मारिका' गुरुबालकदास शहादत दिवस, मार्च 2018
'स्मारिका' गुरुबालकदास शहादत दिवस, मार्च 2018, 'स्मारिका' गुरुबालकदास शहादत दिवस, मार्च 2018'स्मारिका' गुरुबालकदास शहादत दिवस, मार्च 2018
'स्मारिका' गुरुबालकदास शहादत दिवस, मार्च 2018, 'स्मारिका' गुरुबालकदास शहादत दिवस, मार्च 2018'स्मारिका' गुरुबालकदास शहादत दिवस, मार्च 2018
'स्मारिका' गुरुबालकदास शहादत दिवस, मार्च 2018, 'स्मारिका' गुरुबालकदास शहादत दिवस, मार्च 2018'स्मारिका' गुरुबालकदास शहादत दिवस, मार्च 2018
'स्मारिका' गुरुबालकदास शहादत दिवस, मार्च 2018, 'स्मारिका' गुरुबालकदास शहादत दिवस, मार्च 2018'स्मारिका' गुरुबालकदास शहादत दिवस, मार्च 2018
'स्मारिका' गुरुबालकदास शहादत दिवस, मार्च 2018, 'स्मारिका' गुरुबालकदास शहादत दिवस, मार्च 2018'स्मारिका' गुरुबालकदास शहादत दिवस, मार्च 2018
'स्मारिका' गुरुबालकदास शहादत दिवस, मार्च 2018, 'स्मारिका' गुरुबालकदास शहादत दिवस, मार्च 2018'स्मारिका' गुरुबालकदास शहादत दिवस, मार्च 2018
'स्मारिका' गुरुबालकदास शहादत दिवस, मार्च 2018, 'स्मारिका' गुरुबालकदास शहादत दिवस, मार्च 2018'स्मारिका' गुरुबालकदास शहादत दिवस, मार्च 2018
'स्मारिका' गुरुबालकदास शहादत दिवस, मार्च 2018, 'स्मारिका' गुरुबालकदास शहादत दिवस, मार्च 2018'स्मारिका' गुरुबालकदास शहादत दिवस, मार्च 2018

गुरुबालकदास शहादत दिवस ज्ञान प्रतियोगिता के लिए नीचे दिये वेकल्पिक प्रश्नोत्तरी का सही उत्तर नीचे दिए गए उत्तर स्लिप में टिक ✔ करें।

प्रश्न क्रमांक 01. गुरुबालकदास के ऊपर प्राणघातक हमला कहां हुआ?

(A) औराबांधा (B) भंडारपुर (C) कोसा (D) नवलपुर

प्रश्न क्रमांक 02. गुरुबालकदास के ऊपर किस तिथि को हमला हुआ?

(A) 17 मार्च 1860 (B) 16 मार्च 1860

(C) 15 मार्च 1860 (D) 28 मार्च1860

प्रश्न क्रमांक 03. गुरुबालकदास का मृत्यु कब हुआ ?

(A) 15 मार्च 1860 (B) 16 मार्च 1860

(C) 17 मार्च 1860 (D) 28 मार्च1860

प्रश्न क्रमांक 04. गुरुबालकदास के मृत शरीर को कहाँ दफनाया गया?

(A) भण्डारपुर (B) औराबांधा (C) कोसा (D) नवलपुर

प्रश्न क्रमांक 05. गुरुबालकदास का शोधित चित्र किस वर्ष प्रकाशित हुआ?

(A) 2000 (B) 2001 (C) 1805 (D) 1860

---------------✂-- यहाँ से काटिए --✂---------------

उत्तर स्लिप

उत्तर क्रमांक : 01	A ☐	B ☐	C ☐	D ☐
उत्तर क्रमांक : 02	A ☐	B ☐	C ☐	D ☐
उत्तर क्रमांक : 03	A ☐	B ☐	C ☐	D ☐
उत्तर क्रमांक : 04	A ☐	B ☐	C ☐	D ☐
उत्तर क्रमांक : 05	A ☐	B ☐	C ☐	D ☐

प्रतियोगी का नाम --

मोबाईल नं. ---------------------------- हस्ताक्षर ----------------

पता --

पुत के पांव पालने में ही नजर आ जाता है



ममता कुर्रे

यह एक ऐसे होनहार लड़की की जीवन की सच्चाई है जो एक गरीब परिवार से जुड़ी है। जिसको जन्म देने के बाद उसकी मां और पिता उसके नाना-नानी के सहारे छोड़कर अपनी जिदंगी अलग-अलग बसा लेते हैं। पेशे से रिक्शा चालक गरीब और लाचार श्री बेदराम जो कि ग्राम पंचायत अमेरी, जिला बिलासपुर से है और इनके जीवन-यापन का माध्यम केवल रिक्शा ही है। जिससे ये अपने परिवार का पेट पालते हैं। ममता कुर्रे इनकी नातीन है जिसका पालन पोषण इन्होंने किया और जब यह बच्ची ममता गांव के सरकारी प्राइमरी स्कूल में कक्षा पांचवी में 90 प्रतिशत से अधिक अंकों से उत्तीर्ण हुई तो इनको अहसास हुआ कि यह बच्ची होनहार है और भविष्य में अगर इसको अच्छा शिक्षा मिल गया तो यह कुछ न कुछ कीर्तिमान स्थापित करेगी, और तब उन्होंने अपना पेट काटकर इस बच्ची को शहर में पढ़ाने का निर्णय लिया और राजीव गांधी चौक के पास स्थित प्रोगेसिव कान्वेट में इनका दाखिला कराया, जहां से इस बच्ची ने कक्षा 8वीं में भी 90 प्रतिशत से ज्यादा अंक हासिल किया और तब इस स्कूल के प्रिंसिपल ने इन्हें समझाया कि आप इस बच्ची (ममता कुर्रे) को ध्यान से पढ़ाने की कोशिश करें, इसे ट्यूशन क्लास भेजें। तब बेदराम जी ने कहा मैं गरीब हूं इसकी ट्यूशन की फीस नहीं पटा सकता। अपनी मर्जी से पढ़ सकती है तो पढ़ ले, और तब इस मासूम बच्ची ने बिना सुविधा के ही बोरे में जमीन पर बैठ कर 10वीं की परीक्षा भी 90 प्रतिशत से ज्यादा अंक लेकर दिखाया जो कि अमेरी से बिलासपुर स्कूल की दूरी 5-6 किमी है। कभी नाना के रिक्शे में बैठकर तो कभी पैदल ही चलकर स्कूल पहुंचती थी। बिना ट्यूशन क्लास किये ही इन्होंने यही करनामा 12वीं में भी किया। जब में सन् 2017 के बोर्ड परीक्षा में 94 प्रतिशत अंक लेकर उत्तीर्ण हुई और गरीबी के अभाव में भी इस बच्ची ने जी तोड़ मेहनत कर नाना-नानी के सपने उम्मीदों को पूरा किया।

लगन से ही हमें मंजिल हासिल करने में मददगार मिलती है और यह इसे ममता कुर्रे ने कर दिखाया, सलाम! इनके जज्बे को। इसी को कहते हैं कमल कीचड़ में भी खिलता है, उस माहौल में, तंग गली में हो हल्ला के बीच रहकर पढ़ने वाली ममता कुर्रे के साहस को सलाम।

टेकचंद पांडल

आगामी प्रकाशन

स्वाभिमान दिवस

(मानवाधिकार स्वाभिमान डोलायात्रा नवलपुर चिरहुला)

साहेब भुजबल महंत ने साहेब बखरिया भंडारी के सहयोग से नवलपुर से चिरहुला तक ऐतिहासिक डोलायात्रा किया था। जिसमें सतनामियों और जातिवादी सामंती तत्वों के बीच खूनी संघर्ष में सतनामियों का जीत हुआ था। इस ऐतिहासिक घटना से संबंधित विचार, ऐतिहासिक जानकारी , लेख, फोटो, कार्टून, गीत, कविता, नाटक, कहानी आदि हमें भेजें, चयनित सामग्री को प्रकाशित किया जायेगा।

विशेष:

1. आपके द्वारा भेजें सामग्री को प्रकाशित करना अनिवार्य नहीं हैं।
2. किसी भी सामग्री को संपादक मंडल द्वारा चयन के उपरान्त ही प्रकाशित किया जायेगा।
3. अगर कोई लेख/सामग्री प्रकाशित होता है तो उसके लिए किसी भी प्रकार का मानदेय नहीं दिया जायेगा।
4. विवाद के किसी भी स्थिति में न्यायालयीन क्षेत्र बिलासपुर (छ.ग.) होगा।
5. हमें पत्र इस प्रकार भेजें-

> प्रति,
>
> प्रभारी स्वाभिमान दिवस 'स्मारिका'
> बिलासपुर छ.ग.
>
> विषयः स्वाभिमान दिवस 'स्मारिका' में लेख प्रकाशन हेतु
>
> (मेटर)
>
> मेरे द्वारा भेजे जा रहे उपरोक्त लेख/सामग्री अप्रकाशित व अप्रसारित हैं, पत्रिका में प्रकाशित करने पर मुझे आपत्ति नहीं है तथा इसके लिए किसी भी प्रकार के मानदेय का मांग नहीं करूंगा।
>
> दिनांक : .... हस्ताक्षर ....
> स्थान : .... नाम एवं पता ....
> मोबाईल नं. ....

6. अपने लेख-सामग्री को इन माध्यमों से भेजें-

(i) E-mail : gss.satnamiunion@gmail.com

(ii) Whatsapp No. : 9752197165, 7898992499

(iii) डाकपता- हरीश पांडल, सांईबाबा अस्पताल के सामने, रिंग रोड नं.2, गौरव पथ, बिलासपुर (छ.ग.) 495001

संपादक मंडल

गुरु बालकदास शहादत दिवस का शोर जन-जन तक पहुंचाना है
सतनामियों के अस्तित्व और अस्मिता को हर हाल में बचाना है


रामकली दिवाकर


कोमल दिवाकर


कुलदीप दिवाकर


भारतदीप दिवाकर


श्रीमती कृष्णा दिवाकर


अजय घृतलहरे


कु.रंजीता घृतलहरे


कु. तमन्ना घृतलहरे


पार्थ घृतलहरे


श्रीमती सरोजनी घृतलहरे


गेंदराम टंडन


अयोध्या टंडन


श्रीमती समान बाई


किशोर सोनवानी


चिंतामणी देशलहरे


राहुल दिवाकर श्रीमती ललिता दिवाकर


श्रीमती त्रिवेणी दिवाकर


रुपेश बंजारे


करण मधुकर


शंकर माथुर


श्रीमती पार्वती माथुर


श्रीमती राधिका माथुर


सत्यनारायण माथुर

गुरुबालकदास शहादात दिवस पर शत्-शत् नमन

इतनी सी बात हवाओं को बताएं रखना, रोशनी होगी चिरागों को जलाए रखना
लहू देकर की है जिसने हिफाजत हमारी, ऐसे बलिदानी की याद को सीने से लगाए रखना


कुमार लहरे


कु.पूर्णिमा लहरे


कु.संध्या लहरे


जयसूर्य कु.लहरे


आकाश कु.लहरे


कु.दिप्ती लहरे


श्रीमती जोगन लहरे

याद करो उस वीर को, जिसने आजादी की मशाल जलाई थी
रोटी और सम्मान के लिए, औराबांधा में जान गंवाई थी


गायत्री देवी पांडल


हरीश पांडल


कु.सुमन पांडल


कु.नेहा पांडल


युवराज पांडल


श्रीमती अमिता पांडल

सर पे कफन बांध उतरा है, बड़ी शान से
शौर्य गीत गाये हम, वीर बालकदास की सम्मान से


टेकचंद पांडल


कु.अनुपमा पांडल


विवेक पांडल


विकास पांडल


श्रीमती श्री पांडल

'स्मारिका' के प्रेरणास्रोत व महान् शोधकर्ता साहेब लखन सुबोध एवं साहेब भुवन रात्रे जी
जिनके अथक प्रयासों से गुरुघासीदास व सतनाम आंदोलन का इतिहास दुनिया के सामने आया



साहेब लखन सुबोध
अध्यक्ष-गुरुघासीदास विचार शोध संस्था (GVSS) व
केन्द्रीय संयोजक-गुरुघासीदास सेवादार संघ (GSS)



साहेब भुवनलाल रात्रे
संस्थापक अध्यक्ष
गुरुघासीदास विचार शोध संस्था (GVSS)

उठो-जागो लोगों, ये सोने का वक्त नहीं है
जो शहादत में आगे न आये वो सतनामी का रक्त नहीं है।
मिटा दिया जिसने समाज के लिए जानो-तन
वीर बलिदानी को शत्-शत् नमन्, शत्-शत् नमन्

'स्मारिका' पाठक को प्राप्त नहीं होने पर कृपया नीचे लिखे पते पर सम्पर्क करें-
हरीश पांडल, सांईबाबा अस्पताल के सामने, रिंग रोड नं.2, गौरव पथ, बिलासपुर (छ.ग.), मोबा. 8889725245, 7898992499

Master Graphics # 9827958508